Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

अज्ञानी

कोई कहें मांहरी मा तो छे बांझड़ी,
तिण रो हूं छूं आतम जात।
ज्यूं मूर्ख कहें जिण आगनां बिना,
करणी कीधां धर्म साख्यात।।

एक आदमी कहता है मेरी मां बांझ है, मैं उसका बेटा हूं। ऐसे ही कोई अज्ञानी कहता है जिस काम में वीतराग की आज्ञा नहीं है फिर भी यह धर्म है।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 25 • 24 मार्च - 30 मार्च, 2025 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 22-03-2025 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये

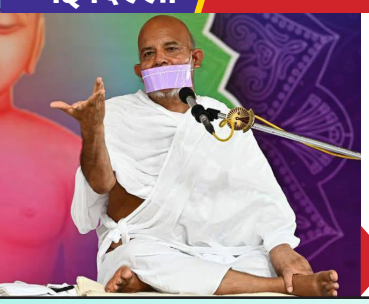

आध्यात्मिकता के मार्ग पर हो बुद्धि का सदुपयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

परिग्रह में जो अटक गया, वह भटक गया : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 12

Address Here

ईमानदारी है सबसे अनमोल संपत्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

गांधीधाम।
17 मार्च, 2025

अध्यात्म के सुमेरु आचार्यश्री महाश्रमणजी ने गांधीधाम के महावीर आध्यात्मिक समवसरण में वर्तमान प्रवास के अंतिम दिवस पावन प्रेरणा देते हुए कहा कि ईमानदारी जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति होती है। वित्त और वृत्त – ये दो महत्वपूर्ण शब्द हैं। वृत्त का अर्थ है चरित्र, जिसे व्यक्ति को प्रयत्नपूर्वक सुरक्षित रखना चाहिए। दूसरा शब्द वित्त का अर्थ है धन, जो कभी आता है और कभी चला जाता है। धन के चले जाने से उतना नुकसान नहीं होता, जितना चरित्र के नष्ट होने से होता है।

व्यक्ति को अपने चरित्र पर विशेष ध्यान देना चाहिए। चोरी, झूठ और कपट से बचना चाहिए। बाहरी आकर्षण, गुस्से या भय के कारण झूठ बोलने से बचना चाहिए। हंसी-मजाक में भी किसी को मूर्ख बनाना या झूठ बोलना अनुचित है। साधु के लिए सर्व मृषावाद विरमण महाव्रत होता है, जबकि गृहस्थों के लिए अणुव्रत का पालन आवश्यक है। ईमानदारी सभी धर्मों और संप्रदायों में महत्वपूर्ण मानी जाती है।

अहिंसा और ईमानदारी– एकता का आधार

अहिंसा और ईमानदारी ऐसे मूल्य हैं, जो सभी को एक मंच पर जोड़ सकते हैं। अणुव्रत आंदोलन सभी के लिए समान रूप से उपयोगी है और इसे हर व्यक्ति स्वीकार कर सकता है। राजनीति, व्यापार और सामाजिक व्यवहार में नैतिकता और ईमानदारी आवश्यक है।

आत्मा के कल्याण के लिए सरलता और सच्चाई को अपनाएं। किसी पर झूठा आरोप न लगाएं और अपनी वाणी पर संयम रखें। कपटपूर्ण भाषा से बचें। कपड़ों और आभूषणों से अधिक सद्गुणों और ज्ञान को महत्व दें।

पूज्यवर ने आगे कहा- गांधीधाम में इस बार का प्रवास थोड़ा लंबा रहा, जो आंशिक चातुर्मास जैसा अनुभव प्रदान कर गया। जैन-जैनेत्तर समुदायों का अच्छा सहयोग और धार्मिक भावना बनी रही।

गांधीधाम प्रवास के तेरहवें दिन मंगल भावना समारोह के अंतर्गत तेरापंथ महिला मण्डल ने गीत का संगान किया। मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति-भुज के उपाध्यक्ष वाणीभाई, भाजपा के पूर्व विधायक पंकजभाई मेहता, गुजरात विधानसभा की पूर्व स्पीकर डॉ. निमाबेन आचार्य, गांधीधाम सभा के पूर्व अध्यक्ष त्रिभुवन जैन ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अनेक पंथों में एकता का कारण है अहिंसा का सिद्धांत : आचार्यश्री महाश्रमण

गांधीधाम।
16 मार्च, 2025

तीर्थंकर के प्रतिनिधि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में आज विभिन्न धर्म-संप्रदायों के श्रद्धालु उपस्थित हुए। ऋषि परंपरा के उज्ज्वल नक्षत्र आचार्य प्रवर ने मंगल प्रेरणाएं देते हुए कहा कि अहिंसा धर्म का मूल तत्व है।

यद्यपि शब्द स्वयं जड़ होते हैं, किंतु वाणी के संवाहक होने के कारण उनका विशेष महत्व होता है। एक शब्द हमारे कानों में पड़ता है तो प्रसन्नता की अनुभूति होती है, जबकि कोई अन्य शब्द कष्टदायी अनुभव दे सकता है। पुद्गल भी हमारी भावनाओं को प्रभावित कर सकते हैं।

भारतीय सभ्यता धर्म, अध्यात्म और आत्मकल्याण से संबंधित है तथा अपने आप में अत्यंत श्रेष्ठ है। जहां सच्चाई, अच्छाई और गुणवत्ता की बात होती है, वहां सीमाओं से परे जाकर भी उसे स्वीकार करना चाहिए। ज्ञान प्राप्त करने के लिए छोटे बच्चे से भी प्रेरणा ली जा सकती है। भारत ऋषि-मुनियों की भूमि है, जहां प्राचीन काल से लेकर आज तक अनेक संत-महात्मा जन्म लेते रहे हैं।

भारत में—विभिन्न भाषाएं बोली जाती हैं, अनेक धर्म-संप्रदाय एवं जातियां हैं। 'वसुधैव कुटुंबकम्' का सिद्धांत प्रचलित है, जो संपूर्ण धरती को एक परिवार मानता है। अहिंसा और मैत्रीभाव हमारी संस्कृति की विशेषता हैं। व्यक्ति को सबके प्रति सद्भावना और मैत्रीपूर्ण दृष्टिकोण रखना चाहिए। अहिंसा में सुख निहित है। अहिंसा, संयम और तप ही सच्चा धर्म है।

अहिंसा भगवती है, जो समस्त जीवों के कल्याण का कारण बनती है। सभी के प्रति अहिंसा और मैत्रीभाव बनाए रखना चाहिए। किसी भी जीव को हानि न पहुंचाने का संकल्प हमारे मन में दृढ़ रहना चाहिए। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन द्वारा समाज में छोटे-छोटे व्रतों के माध्यम से नैतिक उत्थान का मार्ग दिखाया। आचार्य महाप्रज्ञजी ने प्रेक्षा ध्यान के द्वारा मानसिक और आत्मिक शुद्धि का मार्ग बताया। अध्यात्म के द्वारा संस्कारों का विकास संभव है।

भारत में असंख्य संत और पवित्र ग्रंथों की परंपरा रही है। विभिन्न धर्म-पंथों के माध्यम से सत्मार्ग का पथदर्शन प्राप्त होता है। प्राचीन संतों के पास विशेष ज्ञान हुआ करता था। भारत में चौबीस तीर्थंकरों का अवतरण हुआ है। भगवान महावीर और प्रभु श्रीराम जैसे दिव्य व्यक्तित्वों ने इस पावन धरा को गौरवान्वित किया। (शेष पेज 10 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
24 मार्च - 30 मार्च, 2025

संवर और निर्जरा हैं आध्यात्मिकता के मुख्य तत्त्व : आचार्यश्री महाश्रमण

गांधीधाम।
11 मार्च, 2025

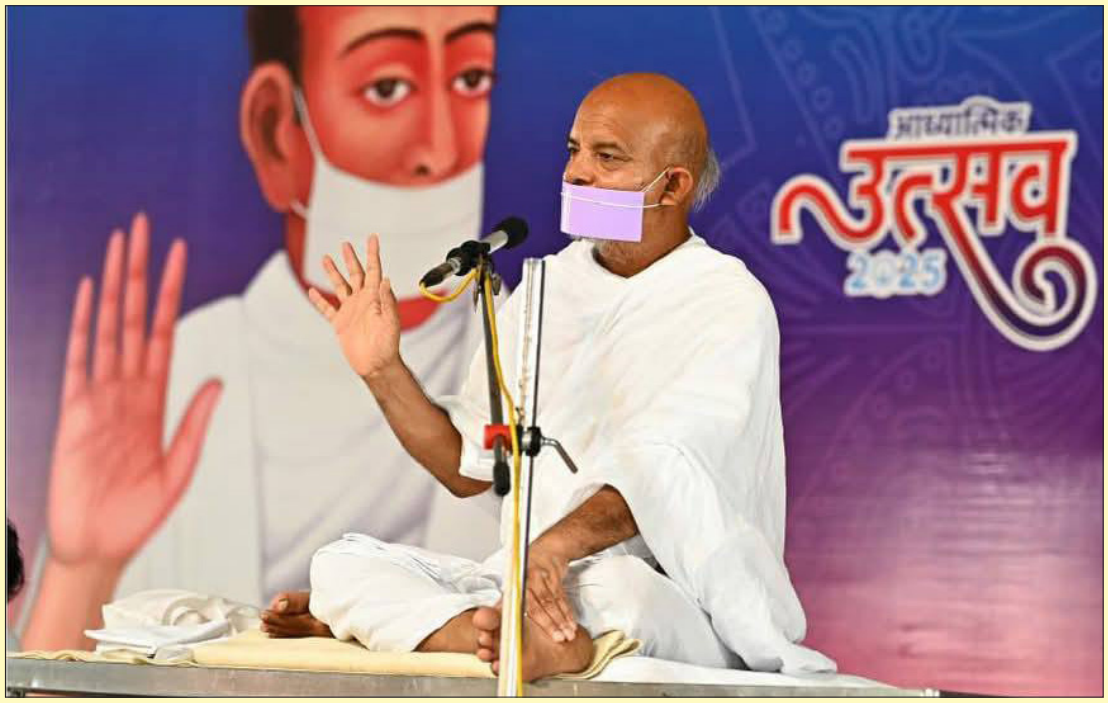

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने शांति का स्रोत बहाते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में अनेक दर्शन हैं, जिनमें एक है जैन दर्शन। जैन दर्शन में अनेक सिद्धांत हैं, जैसे आत्मवाद, कर्मवाद, लोकवाद, क्रियावाद, पुनर्जन्मवाद आदि-आदि। इन सिद्धांतों में आत्मवाद एक प्रमुख सिद्धांत है। आत्मा नाम का तत्व है और अनंत-अनंत आत्माएं दुनिया में हैं। प्रत्येक आत्मा का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है। संसार में आत्मा की अवस्था में पुनर्जन्म भी चलता रहता है।

आत्मा कभी मरती नहीं, जलती नहीं, खंडित नहीं होती, अविच्छिन्न और शाश्वत रहती है। आत्मा अमर होती है। संसार में जन्म-मरण चलता रहता है। मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी होता है। यह संसार अध्रुव, अशाश्वत और दुःखमय है। हमें विचार करना चाहिए कि ऐसा कौन-सा कार्य करें जिससे हमारी आत्मा दुर्गति में न जाएं, नरक और तिर्यंच गति में जाने से बचें। मनुष्य जन्म भी ऐसे परिवार में न हो जहां धार्मिक लाभ न मिले।

18 पापों का सेवन करने वाला व्यक्ति दुर्गति को प्राप्त कर सकता है। जो इन 18 पापों से बचने का प्रयास करता है, तप करता है और कर्म निर्जरा करता है, वह दुर्गति में जाने से बच सकता है। तप-प्रधान व्यक्ति सुगति को प्राप्त कर सकता है। जो ऋजुमति हो, शांत, क्षमाशील और सहनशील हो, वह सुगति को प्राप्त कर सकता है। जो संयमी हो, परिषहों को जीतने वाला हो और निर्जरा के मार्ग पर चलता हो, वह भी सुगति को प्राप्त कर सकता है।

हमें स्नेह, राग-द्वेष और दुर्गुणों से मुक्त रहना चाहिए। हमें यह मानव जीवन प्राप्त हुआ है, इसमें धर्म का लाभ उठाना चाहिए।

जीवन बीत रहा है, इसलिए हमें धर्म की साधना के प्रति जागरूक रहना चाहिए। मनुष्य के पास पूर्व पुण्य का बल हो सकता है, लेकिन केवल भोगने के बजाय भविष्य की भी चिंता करनी चाहिए। जीवन में धार्मिकता बनी रहनी चाहिए। संवर और निर्जरा अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। पुण्य प्राप्त करना कोई बड़ी बात नहीं, बल्कि हमें मोक्ष की कामना करनी चाहिए। पुण्य की लालसा न रखते हुए पुण्यकाल में भी संयम बनाए रखना चाहिए। धर्म का कार्य ही है—दुर्गति से बचाना।

आचार्यश्री ने विदेश जाने वाली समणियों को प्रेरित करते हुए कहा कि विदेशों में भी धर्म के संस्कार मिलते रहें, तप और तत्वज्ञान को समझाया जाए तथा ज्ञान का उचित उपयोग हो।

पूज्यवर की सन्निधि में अग्रवाल समाज से समीर गर्ग, महेश्वरी फाउंडेशन के अध्यक्ष जे.पी. महेश्वरी, गांधीधाम महानगर पालिका के डिप्टी कमिश्नर मेहुल देसाई, कंडला कॉम्पलेक्स गढ़वी समाज से राजमा भाई, नरेश भाई शाह आदि अनेक व्यक्तियों ने अपनी भावनाएं अभिव्यक्त कीं।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आध्यात्मिकता के मार्ग पर हो बुद्धि का सदुपयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

गांधीधाम।
15 मार्च, 2025

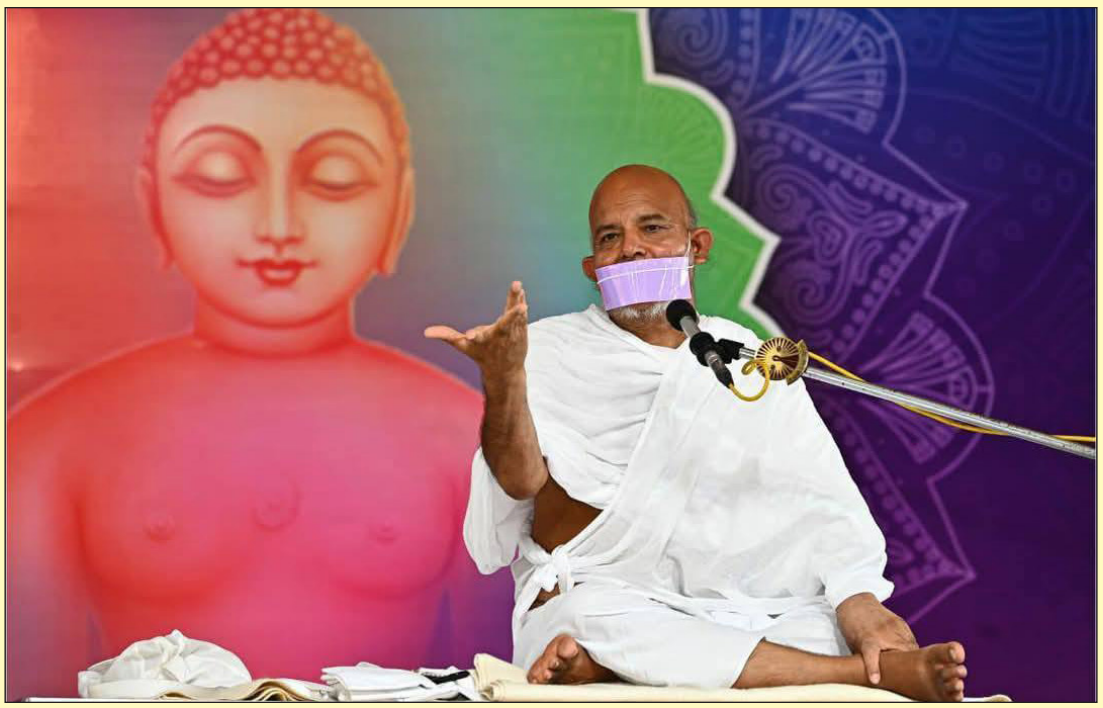

पूर्णिमा के चंद्र के समान शीतलता प्रदान करने वाले युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने ज्ञान की शीतलता प्रदान करते हुए कहा कि हमारे यहां सत्संग की परंपरा है। संतपुरुषों, सज्जनों और ज्ञानियों का संग करना सत्संग कहलाता है। इससे जीवन में सद्गुणों का विकास संभव होता है। संतों का जीवन त्यागमय और संयममय होता है, और यदि उनके पास ज्ञान भी हो तो यह सोने पे सुहागा जैसी बात हो जाती है। संतों के संपर्क में रहने तथा साधुओं और श्रमण-श्रमणियों की पर्युपासना करने से पहला लाभ यह होता है कि कुछ नया सुनने को मिलता है। इस प्रकार आत्मा को ज्ञानामृत रूपी खुराक मिल सकती है।

जीवन को तीन अवस्थाओं में विभाजित किया जा सकता है—बचपन, युवावस्था और वृद्धावस्था। युवावस्था कार्य करने के लिए सबसे अनुकूल होती है। बचपन और बुढ़ापे में एक समानता यह होती है कि दोनों को सहारे की आवश्यकता होती है। यौवनावस्था में शरीर बलवान होता है और अनुभव परिपक्व हो जाता है। इस अवस्था में व्यक्ति सक्रिय रूप से कार्य कर सकता है। किंतु युवावस्था एक बार चली जाए, तो लौटकर नहीं आती। वृद्धावस्था में अनुभव अधिक हो सकता है, किंतु शारीरिक क्षमता सीमित हो जाती है।

युवाओं में ईमानदारी और नैतिकता बनी रहे। चोरी और झूठ से दूर रहें, नशा मुक्त जीवन अपनाएं। अपनी बुद्धि का उपयोग समस्याओं को सुलझाने में करें। आध्यात्मिकता के मार्ग पर बुद्धि का सदुपयोग करें। यदि कोई उलझी हुई रस्सी को सुलझाने का प्रयास करे, तो वह सुलझ सकती है। उसी प्रकार, यदि कोई व्यक्ति सद्गुणों के प्रति आकर्षित हो, तो वह उन्हें अपने जीवन में उतार सकता है। युवा सेवा देने वाले और नेतृत्व करने वाले हो सकते हैं। साधु-संतों के मार्ग में सेवा देने की परंपरा भी चलती आ रही है। युवा शक्ति का संगठन अच्छा होना चाहिए। सद्गुणों का निवास आदमी की आत्मा, उसका मस्तिष्क और उसके व्यवहार में होना चाहिए। युवाओं में अनासक्त भाव हो, विनय का गुण हो, कर्तव्यों के प्रति निष्ठा बनी रहे।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन से पूर्व बृहद् युवा सम्मेलन का समायोजन किया गया, जिसका विषय था 'युवाशक्ति - सद्गुणानुरक्ति'। इस अवसर पर मुनि कुमारश्रमणजी और मुनि योगेशकुमारजी ने अपने विचार प्रकट किए। स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अशोकभाई सिंघवी, तेरापंथ युवक परिषद के मंत्री रोहित ढेलड़िया, पूर्व अध्यक्ष राकेश सेठिया, श्री राजस्थान जैन नवयुवक मण्डल-गांधीधाम के मंत्री मुकेश पारेख, धर्मेश डोशी, महावीर इण्टरनेशनल यूथ के अध्यक्ष मुकेश तातेड़, आयकर कमिश्नर विनिष्टम कोलागाछी, करोड़ीमल गोयल, गुजरात विधानसभा की पूर्व स्पीकर डॉ. निमाबेन आचार्य तथा जी. सी. संघवी ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी। आशीष ढेलड़िया ने अपनी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

गुरु के प्रताप से है हमारा अस्तित्व

नई दिल्ली।

अणुव्रत भवन में अपने मंगल भावना समारोह में श्रावक समाज को संबोधित करते हुए आचार्य श्री महाश्रमण जी को विदुषी शिष्या साध्वी कुन्दन रेखा जी ने कहा आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञजी व युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने संयम जीवन की जिस ऊंचाई को प्राप्त किया है उसके पीछे उनकी लम्बी साधना रही है। अपने सिद्धान्तों और आदर्शों के प्रति गहरी आस्था, गुरु के प्रति अटूट समर्पण और अपने आत्म संयम की साधना से ही उन्होंने जीवन के उच्च शिखरों का आरोहण किया है।

गुरुदेव समाज को केवल उपासना प्रधान नहीं देखना चाहते, वे उसके व्यवहार में नैतिकता और भावों में अध्यात्म की भूमिका भी देखना चाहते हैं। जीवन में रूपान्तरण लाने के उपाय और प्रक्रिया भी उन्होंने बताई है, जिससे हर वर्ग के लोग लाभान्वित हो सकते हैं। गुरूजनों के आशीर्वाद से हमारा अणुव्रत भवन का चातुर्मास बहुत ही साताकारी रहा। इस चातुर्मास में अनेकों कार्यक्रम हुए, शीर्षस्थ लोगों का आवागमन रहा। अनेकों संघीय कार्यक्रम हुए। साध्वीश्री ने सेवा का उल्लेख करते हुए प्रेरणा दी की हमारे धर्मसंघ की सेवा विरल है।

उन्होंने कहा कि अणुव्रत भवन धर्मसंघ का महत्वपूर्ण भवन है जहां से तेरापंथ संघ की अनेकों गतिविधियां संपादित होती हैं। यहां से संपादित उपक्रम संघहित व राष्ट्रहित के लिए होते हैं।

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रबन्ध न्यासी के.सी. जैन ने कहा कि संत समस्याओं की नब्ज को पहचान कर उनका समाधान प्रस्तुत करने वाले होते हैं वे लोगों को ठोस कार्य करने के लिए केवल प्रेरित ही नहीं करते, उसकी क्रियान्विति भी करवाना जानते हैं।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने कहा कि संत समाज को बदलने का सूत्र देते हैं उसके उपाय भी सुझाते हैं। साध्वी कुन्दनरेखा जी का चातुर्मास अणुव्रत भवन व अध्यात्म साधना केन्द्र में होना हम सबके लिए सौभाग्य की बात है।

तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मण्डल, अणुव्रत समिति ट्रस्ट, संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों ने भी साध्वी श्री के गुणों व उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

इस अवसर साध्वी सौभाग्यशाजी ने भावपूर्ण गीतिका के माध्यम से और साध्वी कल्याणयशा जी ने साध्वी अणुव्रत भवन में हुए साताकरी चातुर्मास के लिए समाज का आभार व्यक्त किया।

तेरापंथ सभा, दिल्ली के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, तेरापंथ महिला मंडल की पूर्व अध्यक्षा मंजु जैन, दक्षिण दिल्ली के अध्यक्ष सुशील पटावरी, सुप्रसिद्ध वास्तु विशेषज्ञ उम्मेद दूगड, अणुव्रत न्यास के रमेश काण्डपाल आदि अनेक वक्ताओं ने अपनी श्रद्धा अभिव्यक्त की। मध्य दिल्ली महिला मंडल की बहनों ने भावपूर्ण गीतिका का संगान किया।

साइक्लोथोन कार्यक्रम का आयोजन

पुणे।

तेरापंथ भवन कोंधवा, पुणे में टीपीएफ, नेशनल नेक्सजेन विंग के निर्देशानुसार साइक्लोथोन का आयोजन किया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पुणे म.न.पा नगरसेवक प्रवीण चोरबोले थे।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई, जिसके बाद अध्यक्षा मयूरी सुराणा ने टीपीएफ की गतिविधियों और साइक्लोथोन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला और सभी उपस्थित जनों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि प्रवीण चोरबोले ने इस उपक्रम की प्रशंसा करते हुए साइकिल और शिक्षा के महत्व को समझाया और ऐसे उपक्रम में हमेशा सहयोग देने का वादा किया। प्रवीण सुराणा ने आचार्य महाप्रज्ञ शिक्षा सहयोग योजना के बारे में जानकारी प्रस्तुत की।

साइक्लोथोन की शुरुआत एनर्जेटिक जुंबा सत्र से हुई, इसके बाद सभी लगभग 3.5 किमी की साइक्लिंग कर तेरापंथ भवन पहुंचे, जिसके बाद प्रतिभागियों ने आध्यात्मिक ट्रेजर हंट खेल में भाग लिया। साइक्लोथोन में 4 वर्ष से लेकर 60 वर्ष के लगभग 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिन्हें सफलतापूर्वक साइक्लोथोन पूरा करने के उपरांत सम्मानित किया गया।

इस आयोजन में मनीष भंडारी, आशीष चोरडिया, भूषण चोरड़िया, शोभा पटावरी, मंत्री पूजा संचेती एवं अन्य कार्यकारिणी सदस्यों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मंत्री पूजा संचेती ने आभार व्यक्त किया।

वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

चेंबूर, मुंबई।

अभातेममं के निर्देशानुसार श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल चेंबूर द्वारा वाद -विवाद प्रतियोगिता आधुनिक जीवनशैली और पारिवारिक संस्कार सह अस्तित्व या संघर्ष का आयोजन तेरापंथ भवन के प्रांगण में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत के माध्यम से मंगलाचरण किया गया। चेंबूर महिला मंडल की अध्यक्षा मनीषा कोठारी ने सभी बहनों का स्वागत किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री बेला डांगी के द्वारा किया गया। वाद-विवाद प्रतियोगिता में 9 बहनों ने भाग लिया।

वाद विवाद प्रतियोगिता में जहां एक तरफ बहनों ने बताया कि तकनीकी प्रगति से जीवन आसान हो गया है, वहीं डिजिटल युग में लोग आभासी दुनिया में अधिक व्यस्त हो गए हैं, जिससे वास्तविक सामाजिक संबंध कमजोर हो रहे हैं। बहनों ने पक्ष-विपक्ष पर अपने विचार रखे। परामर्शक क्रांति सुराणा ने विषय पर अपने भाव व्यक्त किए। निर्णायक की भूमिका परामर्शक कल्पना परमार और क्रांति सुराणा ने निभाई।

प्रतियोगिता की विजेता रीना धाकड़ और रिया बडाला रहे। आभार ज्ञापन संगठन मंत्री वनिता बडोला ने किया। महिला मंडल की बहनों की सराहनीय उपस्थिति रही।

नारीत्व का उत्सव : स्वरधारा कार्यक्रम का आयोजन

जयपुर।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल जयपुर शहर के तत्वावधान में नारीत्व का उत्सवः स्वरधारा कार्यक्रम का आयोजन 'शासन गौरव' बहुश्रुत साध्वी कनकश्रीजी के सान्निध्य में मालवीय नगर स्थित अणुविभा के प्रांगण में आयोजित हुआ। मंत्रोच्चारण एवं तीर्थंकर स्तुति से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। महिला मंडल की बहनों ने साध्वीश्री द्वारा रचित गीत की प्रस्तुति से कार्यक्रम की मंगल शुरुआत की। 'नारी कभी न हारी' संस्था की संयोजिका वरिष्ठ साहित्यकार वीणा चौहान को अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ने प्रेरणा पुरस्कार से सम्मानित किया। वीणा चौहान के साथ राजस्थान लेखिका साहित्य संस्थान से नीलम शर्मा, अणुव्रत समिति जयपुर की मंत्री जयश्री सिद्धा, महिला प्रकोष्ठ संघ से प्रदीपा जैन, खतरगच्छ मंडल की अनिता डागा, अर्चना निगम, डॉ. रत्ना शर्मा, शकुन्तला शर्मा, मंजू कपूर, लता भारद्वाज सोनिया सैनी अनेक प्रबुद्ध महिलाओं ने स्वरधारा के अंतर्गत नारी सशक्तिकरण एवं महिला विकास के बारे में अपनी शानदार काव्य रचनाएं प्रस्तुत की। नव युवतियों ने लघुनाटिका के द्वारा नई शैली में आधुनिक महिला के 'सपनों का संसार' का मंचन किया। 'शासनगौरव' साध्वी कनकश्रीजी ने कार्यक्रम की आयोजक संस्था तेरापंथ महिला मंडल जयपुर शहर की प्रस्तुति का अंकन करते हुए कहा- इस टीम में प्रतिभाएं हैं, अभिव्यक्ति की क्षमता है, साथ में हिम्मत और हौसला भी है। साध्वीश्री ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस को महिलाओं की अस्मिता को पहचानने एवं उनकी क्षमताओं व योगदान के मूल्यांकन का अवसर बताया। उन्होंने कहा- नारी में अनेक दायित्वों को एक साथ निभाने की अद्भुत क्षमता है। फिर भी स्वस्थ परिवार व स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए उस पर मुख्य तीन जिम्मेदारियां हैं- बुजुर्गों की सेवा और समाधि, युवापीढी का मार्गदर्शन एवं बच्चों को सुसंस्कारी बनाना।

तेरापंथ महिला मंडल जयपुर, शहर की उपाध्यक्षा प्रतिभा बरडिया ने अतिथियों का स्वागत किया। शासनमाता साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी द्वारा रचित प्रेरणा गीत को राजरानी जैन, कुसुम दसानी ने काव्य प्रवाह में प्रस्तुत किया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा ने अपनी सशक्त भाषा से बहनों को उत्प्रेरित किया। आज के इस कार्यक्रम में अभातेममं की उपाध्यक्ष विजयलक्ष्मी भूरा, पूर्व अध्यक्ष पुष्पा बैद, ट्रस्टी विमला दूगड, अणुविभा के अध्यक्ष पन्नालाल बैद सहित अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित थे। आभार ज्ञापन जयपुर शहर महिला मंडल की मंत्री नीलिमा बैद ने किया। कार्यक्रम का संचालन गुलाब बोथरा ने किया।

प्रेक्षा प्रवाह कार्यशाला का सफल आयोजन

चेंबूर, मुंबई।

अभातेममं एवं प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशानुसार, प्रेक्षा ध्यान कल्याण वर्ष के उपलक्ष्य में तेरापंथ महिला मंडल चेंबूर द्वारा प्रेक्षा प्रवाह कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत के माध्यम से मंगलाचरण किया गया।

अध्यक्ष मनीषा कोठारी ने सभी बहनों का स्वागत करते हुए सभी बहनों को ज्यादा से ज्यादा प्रेक्षा ध्यान से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रेक्षा प्रशिक्षिका उषा कच्छारा ने रंगों के साथ नवकार मंत्र का ध्यान करवाया और 13 चैतन्य केंद्रों की विस्तृत जानकारी दी। ध्यान की पूर्व तैयारी, कायोत्सर्ग, नमस्कार महामंत्र, प्रेक्षा का प्रयोग, ज्योति केंद्र प्रेक्षा का प्रयोग करवाया। बहनों को प्रेक्षाध्यान ऐप से जुड़ने के लिए जानकारी दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री बेला डांगी द्वारा किया गया। सभी का आभार ज्ञापन संगठन मंत्री वनीता बडोला ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
24 मार्च - 30 मार्च, 2025

संक्षिप्त खबर

समणी वृंद का हुआ पदार्पण

रायपुर। आचार्य श्री महाश्रमण जी ने महत्ती कृपा कर समणी निर्देशिका कमल प्रज्ञा जी, समणी करुणा प्रज्ञा जी, समणी सुमन प्रज्ञा जी का समणी उपकेंद्र रायपुर फरमाया था। तदनुसार समणी वृंद का धर्म की गंगा प्रवाहमान करने हेतु रायपुर पधारना हुआ। समणी वृंद के आगमन के उपलक्ष्य में रायपुर तेरापंथ धर्म संघ द्वारा समणी वृंद का स्वागत समारोह तेरापंथ अमोलक भवन में आयोजित किया गया। मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल द्वारा किया गया। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के साथ ही सभी संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किए। समणी सुमन प्रज्ञा जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। समणी करुणा प्रज्ञा जी ने कहा कि हमें दर्पण में स्वयं को देखना चाहिए जिससे मैं अर्थात् अहम की भावना का नाश होगा। समणी निर्देशिका कमल प्रज्ञा जी ने सुमधुर गीतिका के माध्यम से आचार्य श्री की महिमा का गुणगान किया। समणी जी ने कहा कि धर्म हमें जीवन जीने की आध्यात्मिक शैली सिखाता है, जिसके अनुसरण से हम अपनी आत्मा का कल्याण कर सकते हैं।

होली चतुर्मास का आयोजन

नवसारी। होली चतुर्मास के अवसर पर श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा नवसारी के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में साध्वी राकेशकुमारी जी ने लेश्याओं के साथ पंचतत्वों के आधार पर रंगों का प्रयोग करवाया। आपने होली की पौराणिक व्याख्या भी की। प्रेक्षा कल्याण वर्ष के उपलक्ष पर साध्वी मलयविभाजी द्वारा नमस्कार महामंत्र का जप केन्द्र और रंगों के साथ प्रयोग करवाया गया। साध्वीवृंद द्वारा सामूहिक गीत का संगान किया गया। सभा अध्यक्ष हस्तीमल पोखरणा ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का मंगलाचरण महिला मंडल द्वारा किया गया।

एक कदम स्वावलंबन की ओर

नवरंगपुर। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार 'उड़ान - एक कदम स्वावलंबन की ओर' त्रैमासिक प्रशिक्षण कार्यशाला के दूसरे चरण का आयोजन गरिमा सुराणा के निवास स्थान में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। गरिमा सुराणा ने सबका स्वागत करते हुए कहा कि यह जो कार्यशाला चल रही है, इससे महिलाएं आत्मनिर्भर और स्वावलम्बित होकर कुछ नया सीख सकेंगी और अपना बिज़नेस भी कर सकेंगी। तत्पश्चात गरिमा सुराणा और बॉबी जैन ने बेकिंग आदि की जानकारी दी। मंत्री रीना जैन ने आभार व्यक्त किया।

योग कार्यक्रम का आयोजन

दिल्ली। अभातेयुप के आयाम FIT YUVA HIT YUVA के अंतर्गत प्रोजेक्ट FOCUS में तेरापंथ युवक परिषद दिल्ली ने तालकटोरा गार्डन में योग का कार्यक्रम किया, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के युवाओं की भागीदारी रही। तेयुप दिल्ली परामर्शक मनोज बोरड़ ने योगाभ्यास करवाया व योग के नियमित अभ्यास से होने वाले फायदों की जानकारी दी।

सामाजिक सेवा कार्य

साउथ कोलकाता। तेरापंथ युवक परिषद् साउथ कोलकाता एवं तेरापंथ किशोर मंडल साउथ कोलकाता द्वारा कैलाश विद्या मंदिर, चेतला की स्कूल के 65 जरूरतमंद बच्चों को शिक्षा सहयोग हेतु रोजमर्रा की सामग्री वितरित की गई। इस कार्यक्रम के पर्यवेक्षक मोहित दूगड़, संयोजक प्रतीक छाजेड़ एवं मोहित बेंगानी ने अपना श्रम से कार्यक्रम को सफल बनाया। तेयुप एवं किशोर मंडल के सदस्यों ने सेवा कार्य में उपस्थिति दर्ज कराई।

भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर विशेष

अहिंसा और संयम के उत्कृष्ट साधक आचार्य भिक्षु

● मुनि कमलकुमार ●

आचार्य भिक्षु एक क्रांतिकारी आचार्य थे। वे अहिंसा, संयम, तप के उत्कृष्ट साधक थे। अनुशासन, मर्यादा का सदा सम्मान करने वाले थे। दीक्षा के मात्र 8 वर्ष पश्चात आगमों का तलस्पर्शी अध्ययन करने से उन्हें लगा हम आगमों की दुहाई तो देते हैं परन्तु हमारी चर्या उससे भिन्न है। उन्होंने अपनी जिज्ञासाएँ अपने दीक्षा गुरू पूज्य रघुनाथ जी के चरणों में निवेदित की। उस समय पूज्य रघुनाथ जी ने फरमाया कि भीखण तेरा कथन अन्यथा नहीं है परंतु यह पांचवां आरा है इसमें शुद्ध साधुत्व का पालन करना आसान नहीं है। आचार्य भिक्षु ने गहरा चिंतन मंथन किया कि मेरी बात मिथ्या तो नहीं है यह तो स्पष्ट हो ही गया है। अब जब साधना के लिए घर बार छोड़ ही दिया है तो संघ का मोह करने से तो सफलता नहीं मिल सकती।

उन्होंने तटस्थ आत्मस्थ होकर वि.स. 1817 को चैत्र सुदी नवमी को बगड़ी मारवाड़ से स्थानक वासी सम्प्रदाय से अभिनिष्क्रमण किया और अभिनिष्क्रमण के साथ ही आपकी मानो कड़ी कसौटी प्रारंभ हो गई। नगर में समाज ने पड़ह फिरवा दिया कि यदि कोई भी भीखणजी को रहने का स्थान देगा उसे समाज से बहिष्कृत कर दिया जाएगा। इधर आंधी का प्रकोप प्रारंभ हो गया अन्यथा विहार कर अगले गांव जाया जा सकता था। परन्तु उस स्थिति में भी उनका मनोबल सुदृढ़ बना रहा। लोगों ने सोचा स्थानाभाव के कारण इन्हें वापस स्थानक ही जाना पड़ेगा परंतु भीखण जी अपने संकल्प पर अडिग रहे और नगर के बाहर श्मशान घाट में बनी जैतसिंह जी की छतरी पर रात्रिप्रवास किया। स्थान इतना छोटा था कि पांच संतों का बैठ पाना भी कठिन था। रात्रि में शयन की स्थिति नहीं थी पूरी रात अपने संतों से धर्म चर्चा करते रहे। अगले दिन प्रातः विहार किया उनके दिल दिमाग में भगवान महावीर और उनके सिद्धांत बसे हुए थे इसलिए आहार, पानी, स्थान, शयन आदि की प्रतिकूल स्थिति उन्हें विचलित नहीं कर पाई।

ज्यों-ज्यों समय बीतता गया उनका मनोबल, संकल्प बल अग्नि में तप कर सोने की भांति कुन्दन बनकर निखरता गया। कौन जानता था कि यह तेरापंथ जन-जन का पंथ बन जाएगा।

आज पूरे जैन समाज में ही नहीं अपितु पूरे धार्मिक समाज में तेरापंथ का वर्चस्व है, देश विदेश में आज इसकी मांग है। तेरापंथ के सिद्धांत अकाट्य हैं क्योंकि यह महावीर की साधना से प्राप्त सिद्धांतों का पोषक है। आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने अपने प्रवचनों और साहित्य के माध्यम से इसे जैन भोग्य ही नहीं जन भोग्य बना दिया।

वर्तमान में महातपस्वी महातेजस्वी मृदुभाषी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने देश-विदेश की पैदल यात्रा कर जो गरिमा महिमा बढ़ाई है उसे जड़लेखनी से लिख पाना हर किसी के लिए संभव नहीं है। अभिनिष्क्रमण दिवस पर इस पावन पथ के प्रणेता तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक भिक्षु स्वामी को शत-शत नमन अभिनन्दन।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला के अंतर्गत 'मेक योर मार्क' का हुआ आयोजन

विजयनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला के अंतर्गत 'मेक योर मार्क' का शुभारंभ अभातेयुप वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन मांडोत की अध्यक्षता मे तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर द्वारा किया गया। सामूहिक नवकार मंत्र के मंत्रोच्चार के पश्चात विजय स्वर संगम टीम द्वारा विजय गीत का संगान किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया और पधारे हुए सभी का स्वागत करते हुए तेयुप विजयनगर को मेक योर मार्क कार्यशाला आयोजित करने हेतु बधाई संप्रेषित की। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने सभी का स्वागत करते हुए मेक योर मार्क कार्यशाला की खूबियों को बताते हुए सभी का अभिनंदन किया।

मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत ने तीन अलग-अलग सत्रों में प्रतिभागियों को आत्मविश्वास, सतत अभ्यास, कोशिश करते रहना, समय नियोजन, निर्णय लेने की क्षमता का विकास, कम्युनिकेशन, टीम वर्क, मोटिवेशन, नेतृत्व क्षमता के विकास, व्यक्तिगत छाप छोड़ने हेतु अनेक बिंदुओं को विस्तार से समझाते हुए दैनिक उपयोगी सूत्र और गुर सिखाये। प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं के समाधान भी किया। कार्यक्रम के समापन में सभी प्रतिभागियों ने प्रण लिया की वे आगामी जीवन में बताए गए समाधान पर अमल करते हुए अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन करेंगे और साथ ही अपनी प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए रचनात्मक कार्य करेंगे। तेयुप विजयनगर प्रबंध मंडल की टीम द्वारा अभातेयुप टीम, मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत, कार्यक्रम के सहयोगी परिवार स्व. मोतीलाल सिपानी की स्मृति मे घेवरी देवी, हेमचंद्र, हरीश सिपानी परिवार रतनगढ़ - बैंगलोर का सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम मे 35 से अधिक लोगों ने अपनी सहभागिता दर्ज करवाई। कार्यशाला को सफल बनाने में संयोजक विनीत गांधी एवं कैलाश नंगावत का अथक श्रम रहा।

अभातेयुप अभूतपूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया, परिषद् प्रभारी रोहित कोठारी, तेरापंथी सभा उपाध्यक्ष भंवरलाल मांडोत एवं महिला मंडल अध्यक्षा मंजू गादिया ने शुभकामनायें संप्रेषित की। कार्यक्रम का संचालन सह मंत्री पवन बैद ने किया व आभार सह संयोजक कैलाश नंगावत ने किया।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति में कार्यक्रम

सुजानगढ़।

तेरापंथ सभा भवन में 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी एवं साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में शासनमाता असाधारण साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी का तृतीय महाप्रयाण दिवस मनाया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई तत्पश्चात साध्वी वृंद द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान किया गया। 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभाजी एवं साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने शासनमाता के साथ बिताए हुए कुछ पलों की स्मृति की। आपने बताया कि शासन माता का जीवन बहुत ही सरल और सौम्य था, उनके साथ रहना हमारे लिए बहुत ग ौरव की बात है। साध्वी मनीषाश्रीजी ने भी अपनी भावांजलि समर्पित की। हाजरी वाचन के पश्चात केसरी चंद मालू द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया।

संक्षिप्त खबर

उड़ान कार्यशाला का आयोजन

गुवाहाटी। अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल गुवाहाटी द्वारा तेरापंथ धर्मस्थल में समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत 'उड़ान - एक कदम स्वावलंबन की ओर' के तीसरे चरण में फ्लावर एवं डेकोरेटिव कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र एवं प्रेरणा गीत से हुई। अध्यक्ष अमराव देवी बोथरा ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि आशा करते हैं यह प्रशिक्षण कार्यशाला कन्याओं और बहनों को उनके सुनहरे भविष्य की ओर ले जाने में सहायक बनेगा। पिंकी पटावरी ने सुंदर तरीके से विविध प्रकार के फूल बनाने सिखाए। इसमें लगभग 50 बहनों की सहभागिता रही।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री ममता दुगड़ ने किया। बहनों ने उत्साह से कार्यशाला में अपनी सहभागिता प्रदान की। कार्यक्रम संयोजिका श्वेता सिंघी व मंजू दुगड़ ने सभी का आभार व्यक्त किया।

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का आयोजन

चेन्नई। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, चेन्नई के तत्वावधान में ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव 2024 का कार्यक्रम मनाया गया। लगभग 360 ज्ञानार्थी, 115 प्रशिक्षक एवं 15 से 20 कार्यकर्ता इस वार्षिक उत्सव कार्यक्रम में उपस्थित थे। ज्ञानशाला प्रभारी राजेश सांड ने उपस्थित सभा के पदाधिकारी, ज्ञानशाला प्रशिक्षक, ज्ञानार्थी एवं कार्यकर्ताओं का स्वागत करते हुए कहा कि अपने समाज के बच्चे जितने धर्म से जुड़ेंगे उतने ही संस्कारी बनेंगे। जो बच्चे अभी भी ज्ञानशाला से वंचित है उन्हें अवश्य ज्ञानशाला के साथ जोड़ने का प्रयास करना चाहिए। सभा के अध्यक्ष अशोक खतंग ने अपने विचार व्यक्त किए। मंत्री गजेंद्र खांटेड ने कार्यक्रम का संचालन किया।

साइक्लोथोन 3.0 का भव्य कार्यक्रम

उधना। TPF उधना टीम द्वारा साइक्लोथोन 3.0 का भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य स्वास्थ्य एवं शिक्षा के प्रति आमजनों में जागरुकता फ़ैलाने एवं सबको अपने मताधिकार का प्रयोग करने के लिये प्रोत्साहित करने के लिये था।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। इस कार्यक्रम में कुल 33 प्रतियोगियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी सदस्यों ने तेरापंथ भवन से कुल 6 किलोमीटर साइकलिंग की। कार्यक्रम के कन्वेनर अंकिता बाफना और को-कन्वेनर सलोनी हिरण थे जिन्होंने अपने परिश्रम से इस कार्यक्रम को सफल बनाया। अंत में अंकिता बाफना ने उपस्थित सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

रक्तदान एवं निःशुल्क चिकित्सा शिविर का सफल आयोजन

जोधपुर।

सेवा और परोपकार की भावना को साकार करते हुए तेरापंथ युवक परिषद सरदारपुरा एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में रक्तदान शिविर एवं निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन पार्श्वनाथ सोसाइटी, डीपीएस पाल बाईपास पर किया गया।

शिविर का शुभारंभ साध्वी सत्यवती जी के मंगलपाठ से हुआ। रक्तदान अभियान में समाज के 47 रक्तवीरों ने हिस्सा लिया। उन्हें प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। विशेषज्ञों ने बताया कि एक यूनिट रक्त से तीन लोगों की जान बचाई जा सकती है। तेयुप द्वारा प्रतिवर्ष ऐसे शिविर आयोजित किए जाते हैं।टीपीएफ द्वारा आयोजित चिकित्सा शिविर में अनुभवी चिकित्सकों की टीम ने नागरिकों का स्वास्थ्य परीक्षण किया। डॉ. सुरभि चौधरी एवं उनकी टीम के फिजिशियन, बाल रोग विशेषज्ञ, फिजियोथेरेपिस्ट, होम्योपैथ, ऑडियोलॉजिस्ट आदि ने सेवाएं दीं। शिविर में ब्लड टेस्ट की सुविधा भी उपलब्ध रही।

कार्यक्रम में कई गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। पार्श्वनाथ सोसाइटी के विपुल जैन, गौरव शर्मा, संजय जैन व अन्य सदस्य भी सक्रिय रूप से जुड़े रहे। आयोजन की सफलता पर आयोजकों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए एमडीएम ब्लड बैंक, उम्मेद ब्लड बैंक, डॉक्टरों, स्वयंसेवकों व सभी सहयोगियों का आभार जताया।

मेगा साइक्लोथॉन 3.0 का भव्य आयोजन

बेंगलुरु वेस्ट।

टीपीएफ बेंगलुरु वेस्ट एवं टीपीएफ नेक्स्टजेन के संयुक्त तत्वावधान में साइक्लोथॉन 3.0 का भव्य आयोजन तेरापंथ भवन, आरआर नगर से बेंगलुरु यूनिवर्सिटी और वापस तेरापंथ भवन तक किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत टीपीएफ टीम द्वारा मंगलाचरण से हुई, जिसके बाद टीपीएफ बेंगलुरु वेस्ट अध्यक्ष ललित बेगानी ने स्वागत भाषण दिया। टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत ने कार्यक्रम की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि बाल शिक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है और यह आयोजन इस नेक उद्देश्य को समर्थन देने के लिए किया गया है। राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मंडोत द्वारा फ्लैग-ऑफ के साथ साइक्लोथॉन की शुरुआत हुई, जिसमें सभी प्रतिभागियों ने पूरे जोश और उमंग के साथ साइक्लिंग शुरू की।

150 से अधिक प्रतिभागियों ने इस आयोजन में भाग लिया, जिनमें 80 से अधिक साइकिलिस्ट्स ने लगभग 6 किलोमीटर की दूरी तय की। इस साइक्लोथॉन में 6 वर्ष की आयु के बच्चों से लेकर वरिष्ठ नागरिकों तक सभी ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। साइक्लिंग के दौरान दिव्या जैन और हर्ष बरलोटा ने विभिन्न क्विज़ और गतिविधियों का आयोजन करवाया। जिससे साइक्लिंग और अधिक रोमांचक और ज्ञानवर्धक बनी। इस आयोजन में टीपीएफ साउथ ज़ोन अध्यक्ष विक्रम कोठारी एवं मंत्री भरत भंसाली ने भी अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। कार्यक्रम को तेरापंथ सभा, तेयुप, तेरापंथ महिला मंडल और ज्ञानशाला का भी पूर्ण समर्थन प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में गणमान्य अतिथियों की विशेष उपस्थिति रही।

इस आयोजन ने न केवल शारीरिक स्वास्थ्य और फिटनेस को बढ़ावा दिया, बल्कि सामाजिक सहयोग और शिक्षा के प्रति जागरूकता फैलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह आयोजन दिव्य दृष्टि आई हॉस्पिटल, डॉ. प्रकाश छाजेड़ द्वारा प्रायोजित किया गया था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पियूष जैन की भी विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम का समापन टीपीएफ बेंगलुरु वेस्ट मंत्री कौशल खटेड़ के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

ज्ञानशाला वार्षिक उत्सव एवं आध्यात्मिक रंगों की होली का आयोजन

सूरतगढ़।

टॉलीगंज। ज्ञानशाला का वार्षिक उत्सव एवं आध्यात्मिक रंगों की होली का आयोजन किया गया। संजय पारख ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम को प्रारंभ किया।

टालीगंज ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने ज्ञानशाला गीत का संगान किया। टालीगंज सभा के अध्यक्ष अशोक पारख ने सभी का स्वागत किया। ज्ञानशाला संयोजक विनय सेठिया ने ज्ञानशाला की गति प्रगति की सूचना दी। संजय पारख ने बच्चों को कहानी के माध्यम से बच्चों को प्रेरणा दी।

दक्षिण बंगाल ज्ञानशाला संयोजिका डॉ. प्रेमलता चोरड़िया ने अपने वक्तव्य में टालीगंज ज्ञानशाला की सराहना की। अभातेयुप सदस्य सुमित कोठारी ने अपने विचार रखे। मंत्री राजीव दुगड़ ने धन्यवाद किया।

अजय आंनद पुगलिया ने कार्यक्रम का संचालन किया। दूसरे सत्र में मुख्य प्रशिक्षिका सरोज पारख ने आध्यात्मिक रंगों की होली के अंतर्गत पांच रंगों का ध्यान करवाते हुए जीवन में रंगों के महत्व को बताया।

प्रियंका सियाल ने के बच्चों को एक्टिविटी करवाई। ज्ञानशाला क्षेत्रीय संयोजक प्रकाश दुगड़, कमेटी सदस्य पूजा पारख, जयश्री सुराणा, टॉलीगंज तेयुप के मितेश जैन, हेमंत बैंगानी, महावीर जैन ने अपने विचार व्यक्त किया। अजय पुगलिया ने धन्यवाद ज्ञापन किया। अभिभावकों ने भी अपने विचार रखे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
24 मार्च - 30 मार्च, 2025

संबोधि

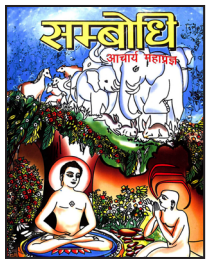

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

गोशालक ने महावीर से बहुत कुछ पाया। शिष्यत्व स्वीकार किया। किंतु इन सबको नकार कर उसने महावीर को भस्म करने के लिए तेजोलब्धि का प्रयोग किया तथा बहुत बुरा-भला कहा।

(४) सिंधु देश में वीतभयपुर का शासक राजा उदाई था। अभीचिकुमार उसका पुत्र था। राजा धार्मिक प्रवृत्ति का और श्रमणोपासक था। एक दिन अपने साधना कक्ष में अवस्थित राजा धर्म जागरण में दिन रात के एक-एक क्षण यापन कर रहा था। जीवन के परम लक्ष्य के प्रति अगाध निष्ठा और संप्राप्त करने की अदम्य भावना बढ़ रही थी। मन ही मन में सोचा-यदि भगवान् महावीर का यहां आगमन हो जाए तो मैं अपने लक्ष्य के लिए उनके चरणों में पूर्णतया सब कुछ त्याग कर समर्पित हो जाऊं। राजा के इस दृढ़ निश्चय को भगवान् ने जाना और उनके चरण वीतभय नगर की दिशा में बढ़ चले। लंबी दूरी तय कर भगवान् महावीर आ पहुंचे। राजा को सन्देश मिला। प्रसन्नता का सागर हिलौरे मारने लगा। वाणी सुनी और निश्चय अभिव्यक्त किया।

राज्य के कार्यभार का वाहक अभीचिकुमार था। वह सर्वथा योग्य था किंतु सम्राट उदाई ने उसे राज्य न देकर अपने भानजे केशिकुमार को दिया। इस घोषणा से सबको बड़ा आघात लगा। अभिचिकुमार भी सन्न रह गया। अपने पिता की भावना को समझ नहीं सका। वे चाहते थे कि पुत्र राज्य-भार में आसक्त होकर स्वयं को न भूले। किंतु यह सब व्यक्ति के विचारों पर निर्भर होता है। पुत्र की इच्छा का सम्मान न कर अपनी भावना को थोपना हितकर नहीं होता। राजा ने किसी की नहीं सुनी और यह कहकर कि मैंने उचित किया है, दीक्षा स्वीकार कर ली।

अभीचिकुमार नगर छोड़कर चम्पा नगरी में कोणिक राजा के पास चला आया। धार्मिक था। धर्माचरण भी बराबर करता था। धार्मिक पर्वों में पूर्णतया धर्माराधन कर सबसे क्षमायाचना करता था अपने पिता को छोड़कर। उदायी नाम से उसके मन में घृणा हो चुकी थी। पिता द्वारा कृतकार्य का स्मरण कर वैराग्नि हृदय में प्रज्वलित हो उठती थी। क्रोध की जड़ें अंतःकरण में इतनी गहरी जम चुकी थी कि वे किसी तरह उखड़ नहीं पाती थीं। जैसे दुर्योधन ने कहा था कि मैं धर्म को भी जानता हूं और अधर्म को भी। किंतु धर्म में प्रवृत्त नहीं होता और अधर्म को छोड़ नहीं पाता। मेरे भीतर जो आसुरी भाव है, वह मुझे जैसे नियुक्त करता है वैसा ही करता हूं।

(५) **संमोही भावना**– जमालि भगवान् महावीर का दामाद था। वह भगवान् महावीर के पास पांच सौ व्यक्तियों के साथ दीक्षित हुआ। ज्ञान, दर्शन, चारित्र की साधना में स्वयं को समर्पित किया। श्रुतसागर का पारगामी बना। तपःसाधना भी दुर्धर्ष थी। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्य भारमल जी युग

साध्वीश्री मयाजी (देवगढ़) दीक्षा क्रमांक 86

साध्वीश्री प्रकृति से सरल, विनयवती व वैराग्यवती थी। सिद्धान्त व थोकड़ों का ज्ञान अच्छा था। आपने उपवास, बेले आदि बहुत तप किये। अठाई आदि अनेक थोकड़े किये। ऊपर में 17 दिन का तप किया।

– साभार: शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

संघ - व्यवस्था

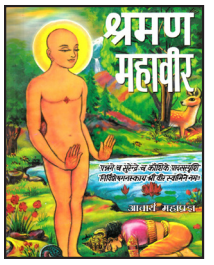

भगवान् महावीर अहिंसा के साधक थे। अहिंसा की साधना का अर्थ है–मन की ग्रन्थियों को खोल डालना। यही है मुक्ति, यही है स्वतंत्रता। राजनीति की सीमा में स्वतंत्रता का अर्थ सापेक्ष होता है। एक देश पर दूसरा देश शासन करता है, तब वह परतंत्र कहलाता है। एक देश उसमें रहने वाली जनता के द्वारा शासित होता है, तब वह स्वतन्त्र कहलाता है। अहिंसा की भूमिका में स्वतन्त्रता का अर्थ निरपेक्ष होता है। जिसका मन ग्रन्थियों से मुक्त नहीं है, वह किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा शोसित हो या न हो, परतन्त्र है। जिसके मन की ग्रन्थियां खुल चुकी हैं, वह फिर किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा शासित हो या न हो, स्वतन्त्र है। इसी सत्य को भगवान् ने रहस्यात्मक शैली में प्रतिपादित किया था। उन्होंने कहा–अहिंसक व्यक्ति न पराधीन होता है और न स्वाधीन। वह बाहरी बन्धनों से बन्धा हुआ नहीं होता, इसलिए पराधीन नहीं होता और वह आत्मानुशासन की मर्यादा से मुक्त नहीं होता, इसलिए स्वाधीन भी नहीं होता।

सामुदायिक जीवन जीने वाला अहिंसक व्यक्ति भी व्यवस्था-तन्त्र को मान्यता देता है, किन्तु उसकी अभिमुखता तन्त्र-मुक्ति की ओर होती है। भगवान् महावीर ने एक ऐसे समाज का प्रतिपादन किया, जिसमें तन्त्र नहीं है। वह समाज हमारी आखों के सामने नहीं है, इसलिए हम उसे महत्त्व दें या न दें, किन्तु उस प्रतिपादन का अपने आप में महत्त्व है।

भगवान ने बताया–कल्पातीत देव अहमिंद्र होते हैं। उनकी हर इकाई स्वतन्त्र है। वहां कोई शासक और शासित नहीं है, कोई स्वामी और सेवक नहीं है, कोई बड़ा और छोटा नहीं है। वे सब स्वयं शासित हैं। उनके क्रोध, मान, माया और लोभ उपशांत हैं, इसलिए वे स्वयं-शासित हैं।

हमारा समाज राज्य के द्वारा शासित है। मनुष्य का क्रोध उपशांत नहीं है, इसलिए वह दूसरों को अपना शत्रु बना लेता है। उसका मन शांत नहीं है, इसलिए वह अपने को बड़ा और दूसरों को छोटा मानता है। उसकी माया उपशांत नहीं है, इसलिए वह दूसरों के साथ प्रवंचनापूर्ण व्यवहार करता है। उसका लोभ उपशांत नहीं है, इसलिए वह स्वार्थ की सिद्धि के लिए दूसरों के स्वार्थों का विघटन करता है।

जिस समाज में शत्रुता, उच्च-नीच की मनोवृत्ति, प्रवंचनापूर्ण व्यवहार और दूसरों के व्यवहारों के स्वार्थों का विघटन चलता है, वह स्वयं शासित नहीं हो सकता।

जनतन्त्र शासन-तन्त्र में अहिंसा का प्रयोग है। विस्तार आत्मानुशासन और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की दिशा में होता है। जनतन्त्र के नागरिक अहिंसानिष्ठ नहीं होते, उसका अस्तित्व कभी विश्वसनीय नहीं होता।

अहिंसा का अर्थ है– अपने भीतर छिपी हुई पूर्णता में विश्वास और अपने ही जैसे दूसरे व्यक्तियों के भीतर छिपी हुई पूर्णता में विश्वास।

हिंसा निरन्तर अपूर्णता की खोज में चलती है, जबकि अहिंसा की खोज पूर्णता की दिशा में होती है। राग और द्वेष की चिता में जलने वाला कोई भी आदमी पूर्ण नहीं होता। पर उस चिता को उपशांत कर देने वाला मुमुक्षु पूर्णता की दिशा में प्रस्थान कर देता है। महावीर ने ऐसे मुमुक्षुओं के लिए ही संघ का संघठन किया।

भगवान् ने आत्म-नियंत्रण, अनुशासन और व्यवस्था में सन्तुलन स्थापित किया।

मुक्ति की साधना में आत्म-नियंत्रण अनिवार्य है। व्यक्तिगत रुचि, संस्कार और योग्यता की तरतमता में अनुशासन भी आवश्यक है। आत्म-साधना के क्षेत्र में आत्म-नियन्त्रणविहीन अनुशासन प्रवंचना है। अनुशासन के अभाव में आत्म-नियन्त्रण कहीं-कहीं असहाय जैसा हो जाता है। व्यवस्था इन दोनों से फलित होती है। (क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

विशिष्ट धर्माराधना का पर्व : पर्युषण

एक द्विसदस्यीय परिवार में पति और पत्नी दो ही थे। किन्तु घर में कोलाहल इतना कि मानो वहां सौ आदमी रहते हैं। बात-बात में पति-पत्नी में झगड़ा हो जाता। दोनों जोर-जोर से एक-दूसरे को गालियां देते। पड़ोस में रहने वाले अन्य परिवार उन दोनों के झगड़ों से परेशान भी होते और उनका उपहास भी करते। पड़ोस में एक बूढ़ा आदमी भी रहता था। वह दोनों के पास गया और उनके बारे में पड़ोस में होने वाले वातावरण से उन्हें अवगत किया। दोनों लज्जित भी हुए। उपहास का पात्र उनका परिवार न बने, इसलिए उन दोनों ने एक-दूसरे से बिलकुल न बोलने का निश्चय किया। बोलना बन्द हुआ तो झगड़ा होना भी बन्द हो गया। भीतर ही भीतर भाव-परिवर्तन भी हुआ, झगड़े का स्थान पारस्परिक आत्मीयता ने ले लिया। परस्पर न बोलने पर भी वे एक-दूसरे के हितों की चिन्ता करने लगे। एक का सुख दूसरे का सुख और एक का दुःख दूसरे का दुःख प्रतीत होने लगा। सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए इस आत्मीय व सौहार्दपूर्ण संबंध की अपेक्षा रहती है।

एक बार की बात, पति कमरे में बैठा था। सर्दी का समय था। पास में जल रही लकड़ियों से वह ताप सेवन कर रहा था। ध्यान किसी अन्य कार्य में लगा हुआ था। अचानक थोड़ी-सी चिनगारी ने पति के लम्बे-चौड़े पायजामे को छू लिया। पति को इसका पता तक नहीं चला। कुछ दूर बैठी पत्नी ने इसे देख लिया। मन में चिन्ता हुई, किन्तु परस्पर बोलना तो बन्द था, निकट जाकर संकेत करना भी उसे उपयुक्त नहीं लगा। उसे एक तीसरा मार्ग सूझा। वह दीवाल की ओर मुंह कर एक पंक्ति दोहराने लगी- 'किसी को अला जले, किसी की बला जले और किसी का पायजामा जले।' यह पक्ति सुनते ही पति का ध्यानाकर्षण हुआ, वह संभल गया, पायजामे पर आगे बढ़ रही आग को उसने तत्काल बुझा दिया। फिर उसने सोचा-आज मेरी पत्नी ने मुझको बचाया है। ऐसी उपकारिणी पत्नी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन न करना तो अशिष्टता होगी। किन्तु समस्या वही कि उसे उससे बोलना नहीं था। उसने भी पत्नी का अनुकरण किया और दूसरी तरफ वाली दीवाल की ओर मुंह कर एक पक्ति बोल पड़ा 'लड़ती है, झगड़ती है, पर घर का ध्यान जरूर रखती है।' उसके बाद दोनों ने पुनः परस्पर बोलना शुरू कर दिया और सौहार्दपूर्ण पारस्परिकता बना ली।

पर्युषण पर्व मैत्री का संदेश लेकर आता है। वर्ष भर न खुलने वाली गांठें भी इस पवित्र अवसर पर खुल जानी चाहिए। संवत्सरी के उपवास की आग में वर्ष भर का वैमनस्य जला डालना चाहिए।

सामायिक का सार है समता भाव। प्रतिदिन सामायिक का प्रयोग किया जाए और व्यवहार में अक्रोध आदि का अभ्यास किया जाए तो महान् आध्यात्मिक पोषण जीवन को प्राप्त हो सकता है और ऐसा पोषण कि जिसका असर अगले जन्म में भी रह सकता है। कितना अच्छा हो कि पर्युषण पर्व से आध्यात्मिक सम्बल पा व्यक्ति पूरे वर्ष भर ऊर्जा प्राप्त करता रहे, अध्यात्म-प्रभावित आचरण उसके जीवन में दिखते रहें।

इसके लिए चार भावनाओं से चित्त को भावित करना अपेक्षित है। वे चार भावनाएं हैं मैत्री, प्रमोद, कारुण्य, माध्यस्थ्य।

मैत्री– दूसरों के हित का चिन्तन करना, सबके साथ मैत्री का भाव रखना।

प्रमोद– ईर्ष्या न रखना, दूसरों की उन्नति को देखकर जलन न करना, प्रसन्न होना।

कारुण्य– संक्लिष्ट अथवा दुःखित जीवों के प्रति करुणा का भाव रखना, उनके मंगल की कामना करना।

माध्यस्थ्य– प्रतिकूल आचरण करने वालों के प्रति मध्यस्थता तटस्थता का भाव रखना, उनके प्रति भी कोध या देष न करना।

इन चार भावनाओं का व्यवहार में प्रयोग करने वाला व्यक्ति धार्मिक कहलाने का अधिकारी है, ऐसा मेरा मन्तव्य है।

संवत्सरी के दिन अष्टप्रहरी पौषध हो सके तो वह किया जाए। चतुष्प्रहरी पौषध तो यथासम्भव किया ही जाए। इस दिन प्रवचन श्रवण व पूरे वर्ष का आत्मालोचन किया जाए। गत वर्ष में श्रावकाचार में कोई दोष लगा हो तो उसकी विशेष आलोचना की जाए। अपेक्षा हो तो प्रायश्चित किया जाए तथा अग्रिम संवत्सरी तक कोई त्याग-प्रत्याख्यान या संकल्प किया जाए। संवत्सरी के पारणे का दिन 'खमतखामणा' का दिन होता है। इस दिन अपने पारिवारिक जनों, संबंधियों व परिचितों से हार्दिक क्षमायाचना प्रायोगिक रूप में की जाए।

इस प्रकार धर्माराधना कर आत्मा को अध्यात्मभावित कर जीवन में उच्चता और गंभीरता प्राप्त करने का लक्ष्य बने। कहा भी गया है-

उच्चत्वमपरा नाद्रौ नेदं सिन्धौ गंभीरता।
अलंघनीयताहेतो द्वयमेतद् मनस्विनि।।

पर्वत में ऊंचाई होती है, पर गहराई नहीं होती। समुद्र में गहराई होती है, पर ऊंचाई नहीं होती। मनस्वी व्यक्ति में ऊंचाई और गहराई दोनों होती हैं।

ज्ञान की गहराई और आचरण की ऊंचाई को अर्जित करने की प्रेरणा इस महापर्व से सभी को प्राप्त हो। (क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002 पर व्हाट्सअप्प** अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री डालमचन्दजी युग

मुनिश्री चम्पालालजी (गंगापुर) दीक्षा क्रमांक 330

मुनिश्री बड़े तपस्वी थे। आपके तप की तालिका इस प्रकार है– उपवास/405, 2/14, 3/7, 4/1, 5/1 आपने लघु सिंह निष्क्रीडित तप की प्रथम परिपाटी सम्पूर्ण की। दूसरी परिपाटी सम्पन्न होने वाली थी। सिर्फ बेला और एक उपवास बाकी रहा और आप दिवंगत हो गये।

– साभार: शासन समुद्र –

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
24 मार्च - 30 मार्च, 2025

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विविध आयोजन

अहमदाबाद

अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल अहमदाबाद द्वारा आयोजित कार्यक्रम के प्रथम सत्र में तेरापंथ युवक परिषद द्वारा संचालित ATDC टीम की सहभागिता से मेडिकल कैंप का आयोजन तेरापंथ भवन शाहीबाग में आयोजित किया गया। मेडिकल कैंप को सफल बनाने में महिला मंडल अध्यक्ष हेमलता परमार एवं उनकी टीम एवं युवक परिषद अध्यक्ष पंकज घीया एवं उनकी टीम का विशेष श्रम रहा। लगभग 83 भाई बहनों ने ब्लड चेकअप करवाया।

द्वितीय सत्र में 'सशक्त नारी सशक्त समाज' सेमिनार का आयोजन डॉ. मुनि मदनकुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति हुई। हेमलता परमार ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सभी को शुभकामनाएं प्रेषित की। मुनि मदन कुमार जी ने कहा- नारी ने अपना बलिदान देकर परिवार का पोषण किया, उनको शिक्षित कर संस्कारित किया। आज नारी निरंतर प्रकाश की ओर, विकास की ओर बढ़ रही है। भगवान ऋषभ से लेकर वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमण जी तक हम देख रहे हैं कि नारी को कितना संपोषण मिला है, नई विकास की दिशाएं खुली है। आज नारी हर क्षेत्र में पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर चलती हैं। कार्यक्रम का संचालन संगठन मंत्री रेखा धूपिया ने किया। आभार ज्ञापन प्रचार प्रसार मंत्री श्वेता लूनिया ने किया। तृतीय सत्र में मुनि धर्मरुचि जी, मुनि डॉ. मदन कुमार जी, मुनि जंबूकुमार जी मुनि मननकुमारजी के सान्निध्य में कवि सम्मेलन 'स्वरधारा' एवं प्रेरणा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि मेयर प्रतिभा जैन ने अहमदाबाद महिला मंडल को सम्मान पत्र देकर प्रोत्साहित किया।

प्रेरणा सम्मान पुरस्कार का वाचन अभातेममं गुजरात क्षेत्रीय प्रभारी चांद छाजेड़ ने किया। मंडल की संरक्षिका, परामर्शक गण, पदाधिकारी गण, पूर्व अध्यक्ष एवं बहनों की उपस्थिति में कवियत्री डॉ अनु मेहता को प्रेरणा सम्मान पुरस्कार से सम्मानित किया। शिल्पा मेहता ने प्रेरणा गीत की रोचक प्रस्तुति दी। विभिन्न सभा संस्थाओं के महानुभावों, श्रावक-श्राविका समाज एवं अन्य 10 संस्थाओं की सराहनीय उपस्थिति रही। संयोजिका सुमन कोठारी, रेखा धूपिया, मधु डागा, मनीषा खंतग, सरिता लोढ़ा, श्वेता लूनिया का विशेष श्रम रहा।

कुशल संचालन मंत्री बबीता भंसाली, सहमंत्री सुमन कोठारी ने किया। आभार ज्ञापन मधु डागा ने किया।

सादुलपुर

सेठिया अतिथि भवन में 'शासनश्री' साध्वी विद्यावती जी के सान्निध्य में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत 'जागो बहनों यह बेला है अभियान की' गीत के माध्यम से शर्मिला बोथरा और कंचन कोठारी ने की। कार्यक्रम में मंजू बैंगानी, साधना सिंघी, राजू देवी बोथरा, उषा दूगड़ आदि ने अपने विचार रखे। साध्वी प्रशस्तप्रभा जी ने महिला की शक्ति के बारे में विस्तार से बताया। साध्वी सूर्ययशाजी ने समाज में नारी के योगदान के बारे में बताया। उन्होंने नारी को आगे बढ़ने के लिए विनय और सहनशीलता के गुणों को आवश्यक बताया। साध्वी विद्यावतीजी ने नारी को समाज में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

सुजानगढ़

अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ सभा भवन में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभाजी एवं साध्वी प्रमिलाकुमारीजी के सान्निध्य में मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संघान किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष राजकुमारी भूतोड़िया द्वारा आए हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया। एडवोकेट जयश्री कुंडलिया भंसाली ने अपने विचार एक सुंदर कविता के माध्यम से व्यक्त किए। मारवाड़ी भाषा के उत्कृष्ट कवि डॉ. घनश्याम कच्छावा ने महिला दिवस के उपलक्ष में अपने विचारों को साझा किया। साध्वी मनीषाश्री जी ने महिला को परिभाषित करते हुए कहा - म- ममता, ह- हिम्मत, और ल - लज्जा का प्रतीक है। कांता दफ्तरी ने कहा कि यह आचार्य श्री तुलसी का सपना था कि महिला सशक्त बने। डॉक्टर साधना जोशी प्रधान ने स्वरचित कविता के माध्यम से नारी के विभिन्न रूपों का उल्लेख किया। 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी ने आशीर्वचन प्रदान किया। साध्वी प्रमिलाकुमारी जी ने स्वार्थी, परार्थी और परमार्थी चेतना को समझाते हुए नारी की शक्ति का उल्लेख किया और उन्होंने बताया कि नारी करुणा, अनुकंपा, सहनशीलता की प्रतिमूर्ति है। अभिनंदन पत्र महिला मंडल कोषाध्यक्ष सज्जन देवी बोकडिया द्वारा पढ़ा गया। महिला मंडल परामर्शक विजया रामपुरिया और कमलेश सिंघी द्वारा डॉक्टर साधना जोशी प्रधान का सम्मान किया गया। महिला मंडल की टीम द्वारा उन्हें अभिनंदन पत्र भेंट किया गया। केसरी चंद मालू द्वारा डॉ. घनश्याम कच्छावा और उपाध्यक्ष सरिता पींचा/ मधु भूतोडिया द्वारा एडवोकेट जयश्री कुंडलिया भंसाली का सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन रेखा राखेचा द्वारा किया गया। कुशल संयोजन महिला मंडल मंत्री डॉ पूजा फूलफगर द्वारा किया गया।

बोरावड़

साध्वी गुप्तिप्रभा जी के सान्निध्य में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने 'आज की नारी कैसी हो?' विषय पर मार्मिक विचार व्यक्त करते हुए गुरुदेव तुलसी के प्रथम मर्यादा महोत्सव पर महिला मण्डल द्वारा किए गये सशक्तिकरण की बात बताई। इसके साथ ही प्रतिदिन चारित्र आत्माओं के दर्शन, शनिवार की सामायिक के लिए बहनों को जागृत किया। साध्वी मौलिकयशा जी व साध्वी भावितयशा जी ने 'स्वयं की शक्ति जगाओ' गीत का सुमधुर संगान किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण महिला मण्डल की बहनों द्वारा किया गया। सभा अध्यक्ष नेमीचंद गेलड़ा तेयुप अध्यक्ष मनीष सुराणा, जैन विद्या आंचलिक प्रभारी मंजूलता भण्डारी, इन्दु कर्णावट ने अपने विचार व्यक्त किए। अभातेममं निर्देशानुसार स्वरधारा प्रेरणा गीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में प्रथम हर्षा चोरड़िया, द्वितीय सुशीला कोटेचा व तृतीय रूचि बोथरा रही। आभार ज्ञापन ज्ञानशाला प्रशिक्षिका सुनिता दुगड़ द्वारा किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन रश्मि गेलड़ा ने किया।

इचलकरंजी

अभातेममं के निर्देशन में इचलकरंजी तेरापंथ महिला मंडल द्धारा अंतर्राष्टीय महिला दिवस पर नारीत्व का उत्सव स्वरधारा का आयोजन किया गया। काव्य प्रतियोगिता का शुभारंभ नवकार मंत्र व प्रेरणा गीत से हुआ। अध्यक्ष शिल्पा बाफना ने महिला दिवस पर अपने विचार प्रकट करते हुए सभी का स्वागत किया। हमारे मुख्य अतिथि और कार्यक्रम में निर्णायक की भूमिका डॉक्टर सुमन पाटनी ने निभाई। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष पर मंडल द्वारा डॉ. पाटनी को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया है। इस प्रतियोगिता में 6 बहनों ने भाग लिया जिसमें प्रथम स्थान पर अंतिमा भंसाली और द्वितीय स्थान पर रजनी पारख रही। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल के मंत्री मीना भंसाली ने किया। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष सपना बालड ने किया। कार्यशाला में लगभग 40 बहनों की उपस्थिति रही।

शिवकाशी

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन अध्यक्ष रानी बरड़िया के निवास पर किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। बहनों ने वक्तव्य और कविता के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किये। प्रेरणा सम्मान वरिष्ठ श्राविका सम्पत देवी डागा को दिया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री बेला कोठारी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन उपमंत्री प्रेम बैद ने किया।

हैदराबाद

अभातेममं के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद द्वारा स्वरधारा एवं प्रेरणा सम्मान का आयोजन साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में तातेड़ भवन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से की गई। मंडल की बहनों ने अलग-अलग काव्य विधा में प्रेरणा गीत का संगान किया। अध्यक्ष कविता आच्छा ने आगंतुक मेहमानों व बहनों का स्वागत किया। साध्वी मयंकप्रभा जी, साध्वी दक्षप्रभा जी व साध्वी मेरुप्रभा जी ने गीतिका व वक्तव्य के माध्यम से महिला के सृजन, विकास व संघर्ष पर प्रकाश डाला। स्वरधारा कार्यक्रम में जैन व जैनेतर समाज की 13 कवयित्रियों ने काव्यपाठ किया। प्रेरणा सम्मान साहित्य के क्षेत्र में विशेष पहचान बनाने वाली सुषमा बैद को दिया गया। साथ ही स्थानीय स्तर पर अपनी कलम से मंडल को विशिष्ट सेवाएं देने वाली दो कवयित्रियों सरला प्रकाश भूतोड़िया व हर्षलता दुधोड़िया को भी प्रेरणा सम्मान से नवाजा गया। स्वरधारा में भाग लेने वाली कवियित्रियों का तेरापंथ महिला मंडल की ओर सम्मान किया गया। साध्वी डॉ गवेषणाश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि महिलाओं ने आज बहुत प्रवर्धन किया है। अब समय है वर्तमान के परिमार्जन व भावी दिशाओं के निर्धारण का, नारी के मौलिक गुणों की सुरक्षा का। प्रेरणा सम्मान का वाचन यशोदा जैन द्वारा किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन मनीषा सुराणा व मीनाक्षी सुराणा ने किया। आभार ज्ञापन सह मंत्री शीतल सांखला द्वारा किया गया।

गंगाशहर

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी एवं मुनि श्रेयांश कुमार जी के सान्निध्य में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंगलाचरण एवं स्वागत मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत द्वारा किया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि अभातेममं की कार्यकारिणी सदस्य ममता रांका ने अपने वक्तव्य में कहा कि महिला को अपने आंतरिक विकास की शुरूआत स्वयं से करनी चाहिए तभी बहनें समाज में कुछ अच्छा निर्माण कर सकेगी। तेरापंथ महिला मंडल गंगाशहर प्रतिवर्ष समाज की एक ऐसी महिला शख्सियत को प्रेरणा सम्मान देती है जो अपने आप में प्रबुद्ध हो, जो सभी बहनों के लिए प्रेरणा का स्रोत हो। इसी उपलक्ष्य में बबीता जैन, प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय भीनासर को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया। मंडल अध्यक्ष संजू लालणी ने पताका पहनकर एवं अभिनन्दन पत्र भेंट देकर उनका अभिवादन किया। मुनि कमलकुमार जी ने कहा कि फैशन के इस दौड़ में इस तरह शिक्षित महिलाओं का सम्मान करना गौरव की बात है। नारी को अपने विनय से, प्रेम से, सहिष्णुता से अपने गौरव को बढ़ाना चाहिए। आज सीता और दमयंती हमारे बीच में नहीं है, लेकिन हम किसी से कम भी नहीं हैं। बबीता जैन ने कहा कि भगवान महावीर की सूक्ष्म दृष्टि और आचार्य तुलसी की पैनी नजर ने नारी को अनेक कुप्रथाओं से मुक्त कर दिया। हर नारी को अपना सम्मान स्वयं से शुरू करना होगा, यदि वह खुद का सम्मान करेगी तो समाज उसे स्वयं सम्मानित करेगा। कार्यक्रम का आभार एवं सफल संचालन महिला मंडल मंत्री मीनाक्षी आंचलिया द्वारा किया गया।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की चतुर्थ पुण्यतिथि पर चारित्रात्माओं के उद्गार

शत-शत शीष झुकावां हां

● 'शासनश्री' साध्वी सुव्रता ●

शासण माता रे शासण माता रे चरणों में,
शत-शत शीष झुकावां हां।

कलकत्ता महानगरी में थे शुभ मुहूर्त में जन्म लियो,
तुलसी गुरु स्यूं दीक्षा लेकर जीवन सफल कियो।।

संस्कृत प्राकृत में पारंगत प्रवचन पटुता प्राप्त करी,
ज्ञान ध्यान में मस्त रहया थे कनक कसौटी पर निखरी।।

देश विदेशां में थे विचरया शासन ने चमकायो थे,
तेरापथ रो गौरव शिखरां खूब चढ़ायो थे।।

पांच दशक तक संघ सुरक्षा और शासना सुखकारी,
जागरूक बण आप कराई शासण रखवारी।।

गुरु चरणां री पावन सन्निधि जीवन नैया ने तारी,
राजधानी में आप लगाई रचना मनहारी।।

धन्य धन्य हे शासण माता बलिहारी म्हे जावां हा,
युगां युगां तक याद करांला गौरव गावां हां।।

टाबरियां री रक्षा करज्यो देता रहीज्यो पथ दर्शन,
वात्सल्य पीठ पर रंग अनूठो आज खिल्यो है मन भावन।।

लय - होली

महिमा हम मिल गाते हैं

● साध्वी कार्तिकप्रभा ●

साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभा की महिमा हम मिल गाते हैं
शासनमाता-4

कोलकाता में जन्म लिया, अलबेली थी वो कला,
मां की लाडली थी, मेधावी थी वो कला।
केलवा की पुण्य धरा संयम स्वीकार किया,
तुलसी कर से दीक्षा, जीवन को धन्य किया।
करुणा की मूरत साध्वीप्रमुखा की महिमा हम मिल गाते हैं।।

अद्भुत व्यक्तित्व तेरा, विलक्षण रचनाएं,
अद्भूत कर्तृत्व तेरा विलक्षण क्षमताएं।
छोटी वय में तुम पर गुरु ने विश्वास किया,
गुरु कृपा को पाकर जीवन भर काम किया।
कुशल नेतृत्व साध्वीप्रमुखा की महिमा हम मिल गाते हैं।।

यह पुण्यतिथि अवसर शासन मां आओ ना,
हर भक्त पुकार रहा अब दर्श दिखाओ ना।
दिल्ली महरौली में अन्तिम था स्वास लिया,
गुरु चरणों में तुमने अन्तिम प्रस्थान किया।
वात्सल्य पीठ शासन मां की महिमा हम मिल गाते हैं।।

गुण गौरव गांवां सा

● साध्वी चिन्तनप्रभा ●

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी रो गुण गौरव गांवा सा,
असाधारण प्रमुखा रो गुण गौरव गांवा सा।
शासन माता ने मिलकर में तो आज बुलावा सा।।

तेरापंथ द्विशताब्दी अवसर आयो,
तुलसी हाथां स्यूं संयम पायो,
मेवाड केलवा रो भाग्य सवायो,
प्रमुखा जी रो दीक्षा स्थान कहायो,
तुलसी कृति ने मिलकर शीश झुकावां सा।।

सहज सौम्य मुद्रा सबको लुभाती,
मंद-मंद चाल थारी सब मन भाती,
प्रवचन शैली थारी अलबेली,
करुणा वत्सलता सब पर उंडेली,
म्हारा मन मंदिर में आस्था रा दीप जलावां सा।।

तेरापंथ संघ है थारो आभारी,
गण में काम करयो थे उपकार भारी,
विनय, समर्पण, सेवा संस्कार भरता,
हर एक समस्या रो समाधान करता,
दिल्ली महरौली में पुण्य तिथि म्हें आज मनावां सा।।

ॐ जय शासनमाता

● 'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभा ●

ॐ जय शासनमाता।
प्यारी प्यारी मूरत सुखदाता त्राता।।

कलकत्ता में जन्म लियो थे केलवा में दीक्षा,
श्री तुलसी चरणों में ग्रहण करी शिक्षा।।

सरस्वती कंठा में उतरी हाथां में लेखन।
चलती रहती करता श्रुत रो अवगाहन।।

चुम्बक सी आकर्षण शक्ति जादू नयना में।
गतिशील चरण हा थारा अमरित वचना में।।

तुलसी कृपा समणीगण में शिखर स्थान पायो।
विविध विभूषण भूषित जीवन शोभायो।।

महाश्रमण रे पुण्य चरण में अंतिम सांस लियो।
पंडित मरण वरण कर जीवन धन्य कियो।।

तर्ज - आरती

लक्ष्य कार्यशाला का भव्य आयोजन

कोयंबटूर।

अभातेममं के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल कोयंबटूर द्वारा दो कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत अभातेममं के चीफ ट्रस्टी पुष्पा बैंगानी द्वारा नमस्कार महामंत्र से की गई।

स्थानीय महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण एवं स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। मंडल अध्यक्षा मंजू सेठिया ने आगंतुक महानुभावों का स्वागत किया। तमिलनाडु सह-प्रभारी अनीता बरड़िया द्वारा साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी के संदेश का वाचन किया गया।

तत्पश्चात आयोजित खुले सत्र में बहनों ने अपनी कई जिज्ञासाएं रखी जिनका समाधान अभातेममं की प्रधान न्यासी पुष्पा बैंगानी द्वारा बहुत ही सरल तरीके से किया गया।

दूसरे चरण की शुरुआत बहनों ने प्रेरणा गीत से की। तेरापंथ महिला मंडल कोयंबटूर की ओर से अध्यक्षा मंजू सेठिया ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल को भावना चौका के लिए राशि का अनुदान दिया। रुचिका बैद ने कविता की सुंदर प्रस्तुति दी। तेरापंथ कन्या मंडल की बेटियों ने 'लक्ष्य' नाटक की सुंदर प्रस्तुति दी।

पुष्पा बैंगानी ने 'कला अभ्युदय योजना' के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा की यह शासन माता को समर्पित है। उन्होंने कहा कि हमें अपनी आत्मा के लिए भी जीना चाहिए, हमारा लक्ष्य बड़ा होना चाहिए। हमें संघ के प्रति समर्पित रहना चाहिए, संघ में, संस्था में सेवा देनी चाहिए। इसके साथ-साथ परिवार को स्वस्थ रखें और संस्कारित करें। अनीता बरड़िया ने कहा कि लक्ष्य हमारे जीवन की आधारशिला है। लक्ष्य का निर्धारण होना बहुत जरूरी है। उन्होंने बताया कि लक्ष्य हासिल करना है तो तीन बिंदु पर विचार करें तो जीवन सफल हो सकता है - माइंडफुलनेस, मैनेजमेंट और मोटिवेशन। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री सुमन सुराणा ने किया।

दोनों सत्रों का संचालन महिला मंडल की सह मंत्री ममता पुगलिया व पूर्व मंत्री आरती रांका ने किया। 65 से ज्यादा बहनों ने उपस्थित होकर इस कार्यशाला को सफल बनाया।

वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

कांदिवली, मुंबई।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल कांदिवली द्वारा प्रेक्षा प्रवाह एवं वाद विवाद कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार मंत्र के उच्चारण से किया गया।

बहनों के द्वारा प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया गया। मुनि मुकुल कुमार जी ने अपने उद्बोधन में प्रेक्षा प्रवाह के अन्तर्गत मंत्रों से जीवन में होने वाले प्रभाव के विषय में समझाया। मुनिश्री ने साथ ही बहनों को प्रेक्षाध्यान द्वारा विशेषतः महिलाओं की मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर होने वाले सकारात्मक प्रभाव पर चिंतन करने के लिए प्रेरणा दी। अध्यक्ष विभा श्रीश्रीमाल ने सभी का स्वागत करते हुए प्रतियोगिता के विषय पर अपने विचार व्यक्त किये एवं सभी प्रतियोगियों को शुभकामनाएं प्रेषित की।

अभातेममं द्वारा निर्देशित प्रेक्षा प्रवाह के अंतर्गत प्रेक्षा प्रशिक्षिका विमला दुग्गड़ ने बहनों को मंत्र प्रेक्षा का अभ्यास करवाया। वाद विवाद प्रतियोगिता में भारती सेठिया एवं विमला दुग्गड़ ने निर्णायक की भूमिका निभाई। सभी प्रतियोगियों ने पक्ष और विपक्ष दोनों मुद्दों पर अपने-अपने विचार रखे। प्रथम स्थान पर नीतू दुग्गड़ और द्वितीय स्थान पर चेतना दुग्गड़ रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री नीतू दुग्गड़ एवं उपाध्यक्ष अलका पटावरी ने किया।

वरिष्ठ उपाध्यक्ष नीतू नाहटा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में लगभग 40 बहनों की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
24 मार्च - 30 मार्च, 2025

शासनमाता का महाप्रयाण दिवस समायोजित

महरौली, दिल्ली।

शासनमाता असाधारण साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की तृतीय पुण्यतिथि का आयोजन स्मरणांजलि के रूप में तेरापंथ भवन परिसर महरौली में 'शासनश्री' साध्वी सुव्रतांजी के सान्निध्य में हुआ। साध्वी वृन्द के सान्निध्य में वात्सल्य पीठ में गुरुदेव द्वारा प्रदत्त मंत्र 'ऊं ह्रीं श्रीं क्लीं शासनमात्रे नमः' का श्रावक-श्राविकाओं द्वारा सामूहिक जाप ने पूरे परिसर को अध्यात्म से तरंगित कर दिया।

कार्यक्रम का अगला चरण महाप्रज्ञ सभागार में भावांजलि के रूप में आयोजित हुआ। साउथ दिल्ली महिला मंडल की बहनों ने सुमधुर मंगलाचरण किया। साध्वीप्रमुखाजी के ज्ञातीजन रश्मि नौलखा, नरपत दुगड़, निर्मला दुगलिया और पुखराज सेठिया ने की भावाभिव्यक्ति हुई। दक्षिण दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुशील पटावरी, जैविभा उपाध्यक्ष पन्नालाल बैद, महिला मंडल अध्यक्ष शिल्पा बैद, अणुव्रत न्यास के प्रबन्ध न्यासी के.सी. जैन, अखिल भारतीय महिला मंडल की पूर्वाध्यक्ष सायर बैगांनी, विख्यात चिकित्सक डा. राजेश कुण्डलिया तथा दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया आदि ने संस्मरणों कविताओं और संदेशों के माध्यम से श्रद्धार्पण किया। 'शासनश्री' साध्वी सुव्रताजी ने शासनमाता के प्रति आस्था अभिव्यक्त करते हुए उन्हें अनेक गुणों का समवाय बताया। उन्होंने कहा कि वे वीतराग पथ की अतुत्तर साधिका और ज्ञान दर्शन चरित्र की उत्कृष्ट आराधिका थी। 'शासनश्री' साध्वीश्री सुमनप्रभा जी ने कहा उनका बाह्य व्यक्तित्व जितना आकर्षक उनका आन्तरिक व्यक्तित्व भी उतना ही प्रभावी था। अध्यात्म निष्ठा, चारित्रिक निर्मलता, श्रमशीलता, चिन्तन शीलता, सहिष्णुता और मृदुता जैसे गुणों से परिपूर्ण था उनका व्यक्तित्व।

साध्वीश्री कार्तिकप्रभाजी और साध्वी चिन्तनप्रभाजी ने शासनमाता के गुणों का स्मरण करते हुए वक्तव्य और गीत प्रस्तुत किया। दिल्ली सभा के मधुर संगायकों ने गीत के माध्यम से वातावरण को सुरमय बना दिया। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने तथा आभार ज्ञापन तेरापंथ भवन के व्यवस्थापक संदीप डूंगरवाल ने किया। पूरी दिल्ली के सभी क्षेत्रों से अच्छी संख्या में श्रावक श्राविकाओं ने उपस्थित होकर शासन माता के प्रति श्रद्धार्पण किया।

आत्म उद्धारक है नवकार मंत्र

रायपुर।

नवकार जाप ग्रुप द्वारा प्रत्येक माह के द्वितीय रविवार को सकल जैन समाज की सभी परंपराओं में मान्य नवकार महामंत्र के जाप का आयोजन किया जाता है।

इसी श्रृंखला में 15वां नवकार जाप रायपुर के छोटापारा स्थित सुराना भवन में साधुमार्गी जैन संघ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ। यह आयोजन आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी, समणी करुणाप्रज्ञा जी एवं समणी सुमनप्रज्ञा जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

जाप आराधना से पूर्व धर्मसभा को संबोधित करते हुए समणी कमलप्रज्ञा जी ने नवकार मंत्र की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि यह मंत्र चित्त की स्थिरता और आत्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है। उन्होंने बताया कि एकाग्रता से जाप करने पर आत्मा जीवन-मरण के चक्र से मुक्ति की ओर अग्रसर होती है। समणी सुमनप्रज्ञा जी ने प्रेरणादायक गीतिका 'महामंत्र नवकार तोड़े बंधन हमारा...' का संगान करते हुए साधकों को आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत किया।

इस अवसर पर नवकार जाप ग्रुप द्वारा रायपुर नगर निगम की नवनिर्वाचित पार्षद कृतिका जैन व अंजलि गोलछा का सम्मान भी किया गया।

पृष्ठ 1 का शेष

अनेक पंथों में...

हमारी संस्कृति में अहिंसा, मैत्रीभाव और आध्यात्मिकता का समावेश है। अहिंसा सभी धर्मों में मान्य है, क्योंकि यह शांति का मार्ग है। यदि पूरी दुनिया में अच्छे संस्कार विकसित हो जाएं, तो संपूर्ण मानवता का कल्याण संभव है। प्राचीन ग्रंथों में मोक्ष का वर्णन मिलता है। धर्म का आचरण करने से मोक्ष की प्राप्ति संभव है। संन्यास की परंपरा भी भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रही है।

जैन रामायण में उल्लेख है कि अयोध्या के कई राजाओं ने संन्यास ग्रहण किया था। राजा हिरण्यगर्भ ने अपने मस्तक पर एक श्वेत केश देखकर संन्यास का निर्णय लिया था। भारतीय सभ्यता में त्याग, संयम और तप का विशेष महत्व रहा है।

कार्यक्रम में अनेक समाजों के महानुभावों ने अपने विचार व्यक्त किए—तेरापंथी सभा से बजरंग बोथरा, गोरखा समाज-कच्छ से विशाल धापा, जाट राजस्थान समाज से परसाराज चौधरी, उत्तर भारतीय समाज से हेमचंद्र यादव, आंध्र समाज गांधीधाम से श्रीनिवासन, विश्नोई समाज से हनुमान विश्नोई, बी.एस.एफ. के कमांडेंट विजयकुमार, आहीर समाज से नवीन भाई आदि। कार्यक्रम के संयोजक जितेंद्र सेठिया ने सभी का आभार व्यक्त किया।

आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में भारत के अनेक क्षेत्रों और समाज के लोगों की विशेष उपस्थिति से ऐसा लग रहा था मानों राष्ट्रीय संत की सन्निधि में छोटा राष्ट्र ही उमड़ आया हो। आचार्यश्री ने इस संदर्भ में मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि आज विभिन्न व्यक्तियों की विशेष उपस्थिति लग रही है। सभी में एकता रहे। सभी में अहिंसा, सच्चाई, संयम जैसे सद्गुण रहे तो जीवन अच्छा हो सकता है। पूज्य सन्निधि में उपस्थित बोथरा परिवार को आचार्य प्रवर ने आध्यात्मिक संबल प्रदान किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

बोलती किताब

खोज समाधान की

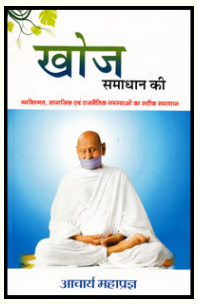

परिवर्तन और समाधान की खोज - यह पुस्तक इस विचार को प्रस्तुत करती है कि परिवर्तन जीवन का एक अनिवार्य अंग है। व्यक्ति हमेशा वर्तमान स्थिति में नहीं रहना चाहता, वह बदलाव और प्रगति की तलाश करता है। इतिहास गवाह है कि समाज और राष्ट्र, जो परिवर्तन के महत्व को नहीं समझ पाए, वे विकास की दौड़ में पिछड़ गए। इसी तरह, व्यक्तिगत स्तर पर भी, जो लोग समस्याओं का समाधान खोजने में असफल रहते हैं, वे जीवन में आगे नहीं बढ़ पाते।

कल्पना की शक्ति - इस पुस्तक में कल्पना को रूपांतरण की पहली आवश्यकता बताया गया है। कोई भी उपलब्धि सबसे पहले कल्पना के रूप में जन्म लेती है और तभी वास्तविकता बनती है। स्पष्ट कल्पना ही जीवन में दिशा तय करती है और आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। बिना किसी ठोस कल्पना के, जीवन दिशाहीन हो सकता है, ठीक वैसे ही जैसे बिना पतवार की नाव।

मानसिक चित्र और संकल्प - कल्पना को वास्तविकता में बदलने के लिए मानसिक चित्र का निर्माण आवश्यक है। जब कोई व्यक्ति अपने लक्ष्य को स्पष्ट रूप से देखता है, तो उसे पाने की प्रेरणा और शक्ति मिलती है। यह पुस्तक इस बात पर जोर देती है कि मानसिक चित्र व्यक्ति के आत्मविश्वास को बढ़ाता है और उसे अपने लक्ष्य की ओर दृढ़ता से बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

स्वप्न से यथार्थ तक का सफर - कल्पना, मानसिक चित्र और संकल्प को जोड़कर ही कोई विचार वास्तविकता में परिवर्तित हो सकता है। कई बार लोग केवल कल्पना करते हैं, लेकिन उसे यथार्थ में बदलने के लिए आवश्यक प्रयास नहीं करते। इस पुस्तक का संदेश है कि स्पष्ट कल्पना, सही दिशा, संकल्प और निरंतर प्रयास ही किसी सपने को साकार कर सकते हैं।

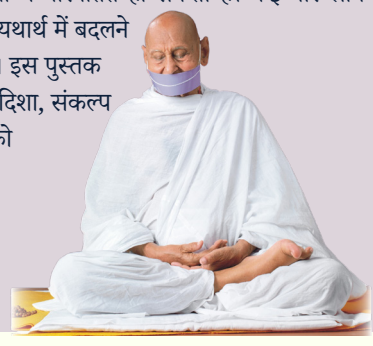

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

साइक्लोथोन कार्यक्रम का हुआ आयोजन

उदयपुर।

तेरापंथ युवक परिषद् एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के संयुक्त तत्वावधान में फिट युवा हिट युवा व प्रोजेक्ट FOCUS के अंतर्गत साइक्लोथोन का कार्यक्रम फतेह सागर झील के किनारे पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत फतहसागर काला किवाड़ से टीपीएफ अध्यक्ष राजेंद्र चंडालिया और तेयुप अध्यक्ष भूपेश खमेसरा के स्वागत वक्तव्य से हुई। कार्यक्रम का उद्देश्य लोगों में फिटनेस के प्रति जागरुकता को बढ़ाना है। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा अध्यक्ष कमल नाहटा, तेयुप परामर्शक महेंद्र सिंघवी, महिला मंडल अध्यक्षा सीमा बाबेल, मंत्री ज्योति कच्छारा, अणुव्रत समिति अध्यक्षा प्रणिता तलेसरा, GBH अमेरिकन हॉस्पिटल से डॉ कीर्ति जैन व डॉ सुरभि जैन की विशेष उपस्थिति रही। तेयुप मंत्री साजन मांडोत, कार्यक्रम संयोजक वैभव पितलिया, तेयुप के अनेकों युवा साथी एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के कई सदस्यों एवं संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी सहित कई गणमान्य लोगों ने परिवार व बच्चों सहित कार्यक्रम मे सहभागिता दर्ज करवाई।

साठ में से कम से कम दो घड़ी का समय धर्म के लिए करें समर्पित : आचार्यश्री महाश्रमण

गांधीधाम।
12 मार्च, 2025

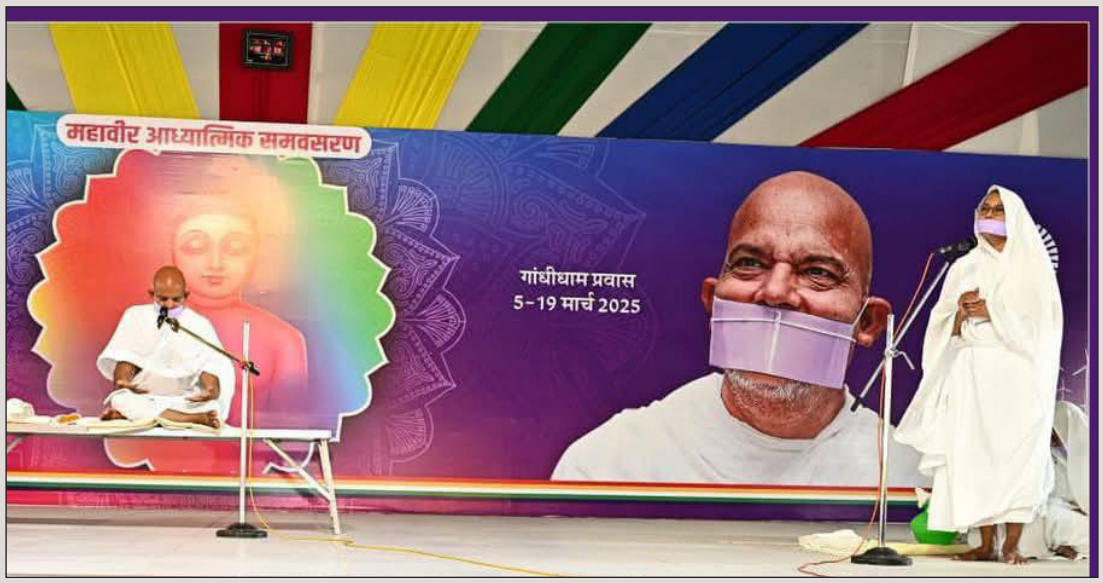

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगम वाणी की अमृत वर्षा कराते हुए फरमाया कि मनुष्य जन्म लेता है और एक दिन अवसान को प्राप्त हो जाता है। वह अकेला आता है, कर्म करता है, अकेला चला जाता है और अकेला ही अपने कर्मों का फल भोगता है। अकेला ही अपने कर्मों का बंध करता है। यह एक नैसर्गिक सच्चाई है। यह एकत्व का भाव है कि 'मैं अकेला हूं।'

आत्मा अकेली है, लेकिन मोह के कारण व्यक्ति यह मान लेता है कि 'यह मेरा है, वह मेरा है।' नैसर्गिक सच्चाई यह है कि 'मैं अकेला हूं और बाकी सब व्यवहार मात्र है।' यह मेरापन व्यक्ति को दुःख की ओर ले जा सकता है। एक साधु पुरुष सोचता है—₹न कुछ तेरा, न कुछ मेरा, दुनिया रैन बसेरा।₹

'मैं आत्मा हूं, मैं शरीर नहीं हूं।' जैसे सोना मिट्टी से मिला हो सकता है, परन्तु वह अलग रहता है, वैसे ही आत्मा और शरीर भिन्न हैं। यह अन्यत्व की चेतना एक भावना है। एक विचारधारा यह मानती है कि जीव ही शरीर है, जबकि दूसरी विचारधारा कहती है कि जीव और शरीर अलग-अलग हैं। ये आस्तिक और नास्तिक विचारधाराओं के सिद्धांत हैं। आत्मा स्वभाव से अमूर्त होती है, जबकि शरीर मूर्त होता है। आत्मा जब पापों से अपना अहित कर लेती है, तो वह स्वयं को उतना ही नुकसान पहुंचा सकती है जितना कोई अपने ही गले को काटकर कर सकता है।

जब दुःख का उदय आता है, तब ज्ञाति-जन भी उस दुःख में भागीदार नहीं बन सकते। आत्मा अकेले ही अपने दुःख को भोगती है। कर्म बंधन करने वाला स्वयं ही उसका परिणाम भोगता है। व्यक्ति दूसरों के लिए भी पाप कर सकता है, लेकिन पाप के फल का भोग अकेले ही करना पड़ता है। परिवारजन संपत्ति में भागीदार हो सकते हैं, परन्तु दुःख में कोई साथी नहीं होता।

गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी पाप कर्म से बचें और सदाचार का जीवन अपनाएं। धन आगे साथ नहीं जाएगा, लेकिन धर्म आगे भी साथ रहेगा। इसलिए कहा गया है कि अट्ठावन घड़ी काम की, दो घड़ी राम की, अट्ठावन घड़ी कर्म की, दो घड़ी धर्म की, अट्ठावन घड़ी जीव, दो घड़ी शिव की। साठ घड़ी में से कम से कम दो घड़ी का समय धर्म के लिए अवश्य समर्पित करें। जीवन का व्यवहार अच्छा हो, दुकानदार ईमानदारी से कार्य करें। सामायिक का फल उत्तम होता है। हमें दूसरों की विशेषताओं को देखना चाहिए। निर्जरा और संवर पुण्य-पाप से भी उच्च कोटि की चीजें हैं। हमें पापाचार से बचने का निरंतर प्रयास करना चाहिए।

साध्वीवर्याश्री सम्बुद्धयशाजी ने कहा - महातपस्वी वह होता है जिसकी सहनशीलता अप्रतिम होती है। आचार्य प्रवर की सहनशीलता अद्वितीय है। उनकी देशना से सभी को जीवन जीने की कला प्राप्त हो रही है। हमें साधना की ऊंचाइयों तक पहुंचाने वाले सूत्र प्राप्त हो रहे हैं। ऐसे परम पुरुष के चरण जहां टिकते हैं, वह भूमि पावन हो जाती है। सौभाग्य से हमें ऐसे गुरु प्राप्त हुए हैं। पूज्यवर की सन्निधि में उपस्थित महानुभाव एडीशनल कमिश्नर जीएसटी विकास जोशी, रेलवे एरिया मैनेजर आशीष धानिया, राजस्थान महेश्वरी समाज के विवेक मिलाप, राजपूत राजस्थान समाज के मंत्री इंद्रजीत सिंह, बाबुलाल सिंघवी एवं अमर सिंह सिंघवी आदि महानुभावों ने अपनी भावनाएं अभिव्यक्त कीं।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

सम्यकत्व प्राप्ति के बाद निश्चित है मोक्ष : आचार्यश्री महाश्रमण

गांधीधाम।
14 मार्च, 2025

> गुरुदेव ने आगे फरमाया कि जीवन में एक बार भी संवर आ गया, सम्यकत्व आ गया तो फिर उसका मोक्ष निश्चित है। परंतु निर्जरा होने मात्र से मोक्ष मिले ही, यह आवश्यक नहीं। सिद्धांत की दृष्टि से देखे तो प्रथम गुणस्थान में मिथ्यात्वी के भी निर्जरा हो सकती है। मिथ्या दृष्टि के सकाम – अकाम दोनों तरह की निर्जरा हो सकती है। अभव्य जीव भी नौवें ग्रैवेयक तक स्वर्ग में उत्पन्न हो सकता है।

अध्यात्म पुरुष आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी अमृत देशना में फरमाया कि हमारी दुनिया में आत्मा नामक तत्व है। आत्मा के अतिरिक्त शरीर, वाणी, मन, इन्द्रियां, पर्याप्ति और प्राण भी होते हैं। एक आत्मा की परिधि में अनेक तत्व समाहित होते हैं।

जैन वाङ्मय में नव तत्वों में 'आश्रव' भी एक तत्व है। आश्रव संसार में भ्रमण का कारण है, जबकि संवर मोक्ष का कारण है। मोक्ष ही परम तत्व है और साधना की निष्पत्ति मोक्ष में होती है। मोक्ष आत्मा की सर्वकर्म मुक्त अवस्था है। यह परम अवस्था ही सिद्धत्व है। इसे प्राप्त करने का उपाय संवर और निर्जरा है।

गुरुदेव ने आगे फरमाया कि जीवन में एक बार भी संवर आ गया, सम्यकत्व आ गया तो फिर उसका मोक्ष निश्चित है। परंतु निर्जरा होने मात्र से मोक्ष मिले ही, यह आवश्यक नहीं। सिद्धांत की दृष्टि से देखे तो प्रथम गुणस्थान में मिथ्यात्वी के भी निर्जरा हो सकती है। मिथ्या दृष्टि के सकाम – अकाम दोनों तरह की निर्जरा हो सकती है। अभव्य जीव भी नौवें ग्रैवेयक तक स्वर्ग में उत्पन्न हो सकता है।

आचार्यश्री ने फरमाया कि भौतिक आकांक्षाओं से रहित साधना होनी चाहिए। संवर और निर्जरा का निरंतर अभ्यास किया जाए।

संतों के लिए ये दोनों साधनाएं ही वास्तविक संपत्ति हैं। साधु तपोधन होते हैं, अतः उनकी तपस्या और साधना की संपत्ति बढ़नी चाहिए और सुरक्षित रहनी चाहिए।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने पच्चीस बोल गुरुदेव के समक्ष प्रस्तुत किए एवं गीत की प्रस्तुति दी। तत्पश्चात पूज्य प्रवर ने बच्चों की कई जिज्ञासाओं को समाहित किया।

अणुव्रत समिति गांधीधाम के अध्यक्ष अनंत सेठिया, आर्य समाज गांधीधाम के अध्यक्ष वाचोनिधि आचार्य, सभा के पूर्व अध्यक्ष पारसमल खांटेड़, हनुमानमल भंसाली, सोहनलाल बालड़, हीरालाल जी, ओसवाल समाज पचपदरा अध्यक्ष गौतम सालेचा ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
24 मार्च - 30 मार्च, 2025

परिग्रह में जो अटक गया, वह भटक गया : आचार्यश्री महाश्रमण

शासनमाता साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभाजी की पुण्यतिथि पर हुआ उनके गुणों का स्मरण

गांधीधाम।
13 मार्च, 2025

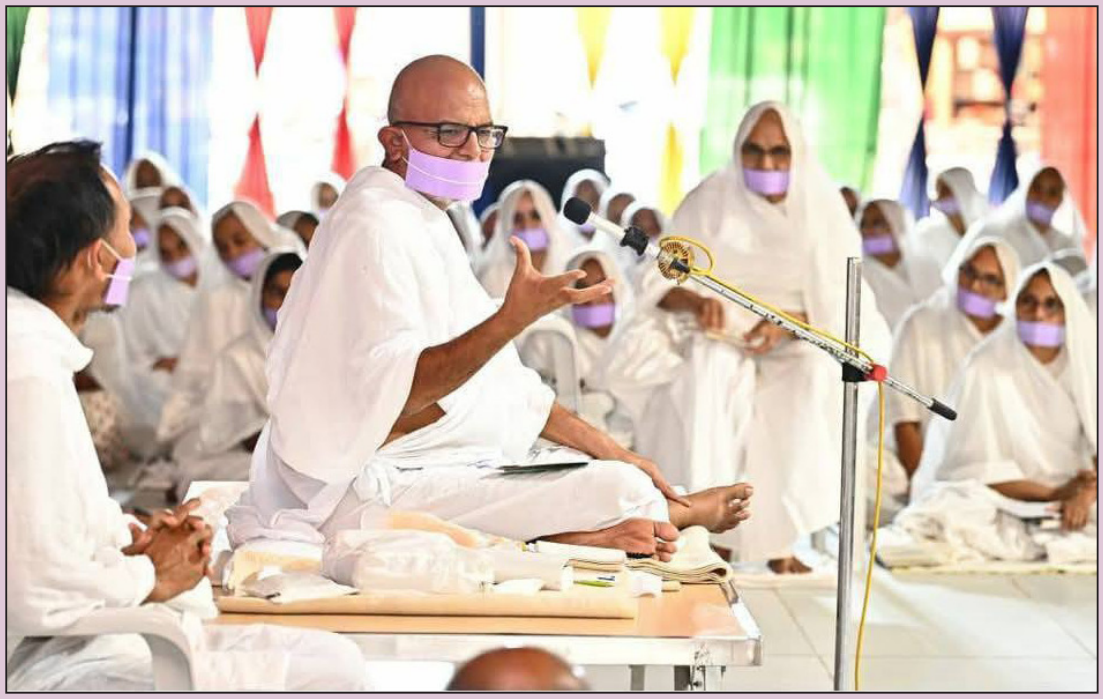

> गुरुदेव तुलसी मुनि अवस्था में लगभग 11 वर्षों तक रहे और साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी सामान्य साध्वी के रूप में करीब 11 वर्षों तक रहे। गुरुदेव तुलसी बिना कोई अगवानी बने सीधे युवाचार्य, आचार्य बने और साध्वीप्रमुखाजी भी बिना कोई अगवानी बने सीधे सामान्य साध्वी से असामान्य साध्वी बन गईं।

फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी - चातुर्मासिक चतुर्दशी और होली का त्योहार—आज ही के दिन तीन वर्ष पूर्व शासनमाता साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभाजी का दिल्ली में महाप्रयाण हुआ था। होली का लौकिक महत्व भी है—बुराई पर अच्छाई की विजय और भाईचारे का पर्व।

जन-जन में सद्भावना और नैतिकता का जागरण कराने वाले आचार्यश्री महाश्रमणजी ने होली के पर्व पर आध्यात्मिक वाणी का रसास्वादन कराते हुए फरमाया कि शास्त्रों में साधुता का दर्शन कराया गया है। साधु पांच आश्रवों को पहचानकर छोड़ने वाला होता है। ये पांच हैं— हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन और परिग्रह। मूल पांच आश्रव बताए गए हैं— मिथ्यात्व, प्रमाद, अव्रत, कषाय, योग। ये पूर्ण रूप से केवल चतुर्दश गुणस्थान में ही छूट सकते हैं। हिंसा, झूठ आदि पांच आश्रवों का जो त्याग कर दे, वह सच्चा साधु होता है। साधु को मन, वचन और काय को संयमित और सुरक्षित रखना चाहिए। जो छः जीवनिकायों (पृथ्वी, अप्, अग्नि, वायु, वनस्पति और त्रस जीवों) का रक्षक है, वह अहिंसा मूर्ति होता है। साधु पांच इन्द्रियों का निग्रह करता है। निमित्त मिलने पर भी जिनका चित्त विकृत नहीं होता, वह धीर पुरुष होता है। ऐसे साधु निर्ग्रन्थ, ऋजुदर्शी और मोक्षदर्शी होते हैं।

संन्यास— परम सौभाग्य का द्वार

अनंत काल की यात्रा में साधुत्व प्राप्त होना परम सौभाग्य है। यह संन्यास जिसे मिल जाए, उसे संसार की सबसे बड़ी उपलब्धि मिल जाती है। साधु परिग्रह में लिप्त नहीं होता, मोह-माया से विरक्त रहता है। वह चलता-फिरता तीर्थ होता है। साधु को आत्मनिरीक्षण करना चाहिए—'क्या ये उपरोक्त गुण मुझमें हैं?' एक साधु का संक्षेप में चित्रण यह हो जाता है - पांच महाव्रत, तीन गुप्तियों का साधक, छः जीव निकाय के प्रति संयत, पांच इन्द्रियों का संयम, धीर, संयमदर्शी, ऋजुदर्शी और निर्ग्रंथदर्शी।

परिग्रह में जो अटक गया, मानो किसी अंश में वह भटक गया। हमें इसमें अटकना, भटकना नहीं, अच्छी जगह पर केंद्रित रहना है।

प्रश्न चार - उत्तर एक :

पूज्यप्रवर ने एक कथानक सुनाते हुए कहा -

पान सड़े, घोडा अड़े, विद्या विसर जाए।
रोट जले अंगार पर, चेला किण न्याय ?

एक गुरुजी ने शिष्य से प्रश्न किया- मेरे चार प्रश्न हैं, उन सबका उत्तर एक ही होना चाहिए। पान सड़ जाते हैं, घोडा अड़ जाता है, विद्या विस्मृत हो जाती है, अंगारों पर रोटी जल जाती है, क्यों ? उत्तर दिया गया - फेरा नहीं। पान को फेरा नहीं तो सड़ जाएगा, घोड़े को घुमाएं नहीं तो वह भी अड़ सकता है, विद्या का पुनरावर्तन नहीं किया जाए तो वह विस्मृत हो सकती है और रोटी को नहीं फेरेंगे तो वह जल सकती है।

यह हाजरी भी थोड़ी सी फेरने की सी चीज है। हम भी हाजरी के माध्यम से फेरने का काम करते हैं। हाजरी के माध्यम से साधु-साध्वियों को उनके नियमों के प्रति जागरूक किया जाता है। इससे साधुत्व पुष्ट बन सकता है। धर्मसंघ हमारा आश्रय है। हम संघ में रहकर साधना करते हैं। जहां भी अपने साधुत्व की शुद्धता के प्रति जागरूक रहने का प्रयास करना चाहिए। सर्व साधु-साध्वियां पांच महाव्रत, पांच समिति और तीन गुप्ति की अखंड आराधना करे। यहाँ अखंड आराधना की बात है - बीच में शनिवार, रविवार या एक मिनट भी छुट्टी की बात नहीं है। साधुपन खंडित नहीं होना चाहिए। जिसकी जो जिम्मेवारी है, उसका ध्यान रखना भी महत्वपूर्ण बात है। **जिसकी जो ड्यूटी है, उसमें ब्यूटी रहे, उसके पालन में ब्यूटी रहे।**

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी— एक अप्रतिम व्यक्तित्व

तीन वर्ष पूर्व दिल्ली में साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी का अध्यात्म साधना केंद्र के अनुकंपा भावना परिसर में महाप्रयाण हुआ। वे लगभग 50 वर्षों से कुछ अधिक समय तक साध्वीप्रमुखा रहीं। आठ साध्वीप्रमुखाओं में सबसे अधिक लंबा काल साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी का रहा। उनके संरक्षण में अनेकों को साधना करने का अवसर मिला। गुरुदेव तुलसी मुनि अवस्था में लगभग 11 वर्षों तक रहे और साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी सामान्य साध्वी के रूप में करीब 11 वर्षों तक रहे। गुरुदेव तुलसी बिना कोई अगवानी बने सीधे युवाचार्य, आचार्य बने और साध्वीप्रमुखाजी भी बिना कोई अगवानी बने सीधे सामान्य साध्वी से असामान्य साध्वी बन गईं। यह उनके कर्मों का योग था, पुण्य का प्रभाव था। गुरुदेव तुलसी ने उन्हें साध्वीप्रमुखा के रूप में प्रतिष्ठित किया। उन्होंने तीन आचार्यों की सेवा की और ज्ञान व साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया। उन्होंने खासकर साध्वी समुदाय को सेवा दी, अनेकों छोटे संतों को भी प्रेरणा दी। वर्तमान में साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी, साध्वीवर्याजी और मुख्य मुनि व्यवस्था संचालन में सक्रिय हैं। ये तीनों बहुश्रुत परिषद के सदस्य भी हैं।

> सर्व साधु-साध्वियां पांच महाव्रत, पांच समिति और तीन गुप्ति की अखंड आराधना करे। यहाँ अखंड आराधना की बात है - बीच में शनिवार, रविवार या एक मिनट भी छुट्टी की बात नहीं है। साधुपन खंडित नहीं होना चाहिए। जिसकी जो जिम्मेवारी है, उसका ध्यान रखना भी महत्वपूर्ण बात है। जिसकी जो ड्यूटी है, उसमें ब्यूटी रहे, उसके पालन में ब्यूटी रहे।

संयम पर्याय के 50 वर्ष

पूज्यवर ने आगे फरमाया - दो साध्वियां, जिनके संयम जीवन के 50 वर्ष संपूर्ण होने वाले हैं— साध्वी ललिताश्रीजी (टमकोर) एवं साध्वी दीपमालाजी (श्रीगंगानगर) - दोनों साध्वियां आगम स्वाध्याय का प्रयास रखें। शरीर और स्वास्थ्य का भी ध्यान रखने का प्रयास और धर्मसंघ को जितना संभव हो सके, सेवा देने का प्रयास रखें।

होली के शुभ अवसर पर पूज्यवर ने प्रेक्षाध्यान प्रयोग करवाया। आचार्यश्री की आज्ञा से मुनि चन्द्रप्रभजी और मुनि कैवल्यकुमारजी ने लेखपत्र का वाचन किया। आचार्यश्री ने मुनिद्वय को दो-दो कल्याणक बक्सीस किए। तदुपरान्त उपस्थित साधु-साध्वियों ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया।

शासनमाता के महाप्रयाण दिवस पर वर्तमान साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी ने कहा—'दुनिया में कुछ लोग प्रतिभासंपन्न होते हैं और अपनी प्रतिभा का भरपूर उपयोग करते हैं। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी उनमें से एक थीं। वे जब कला के रूप में थे, साध्वी कनकप्रभा के रूप में थे तब भी अपनी प्रतिभा का उपयोग करते थे। वे हमें फरमाते थे - 'अपनी प्रतिभा का उपयोग किया करो, बातों में समय व्यर्थ मत किया करो।' वे अपने समय के प्रति जागरूक थे, अध्ययन और अध्यापन में रुचि लेते थे। सृजनात्मक क्षेत्र में वे अनवरत आगे बढ़ रहे थे। कुशल प्रशासन वही कर सकता है जिसके मन में छोटों के प्रति वात्सल्य होता है, वृद्धों के प्रति करुणा होती है, और रुग्ण के प्रति करुणा के भाव होते हैं।'

'शासन गौरव' साध्वी कल्पलताजी द्वारा लिखित पुस्तक 'सादर स्मरण शासनमाता' का तीसरा भाग जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों द्वारा आचार्यप्रवर के सम्मुख लोकार्पित किया गया। इस संदर्भ में आचार्यश्री मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीत का संगान किया। मारवाड़ जंक्शन के विधायक केशाराम चौधरी ने आचार्यश्री के दर्शन करने के उपरान्त अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति दी और आचार्यश्री से मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।